॥ सत्यनाम ॥

सत्य गुरु कबीर

Satya Guru Kabir

Special Issue - Bhajan Part 1
भजन विशेषाङ्क भाग १

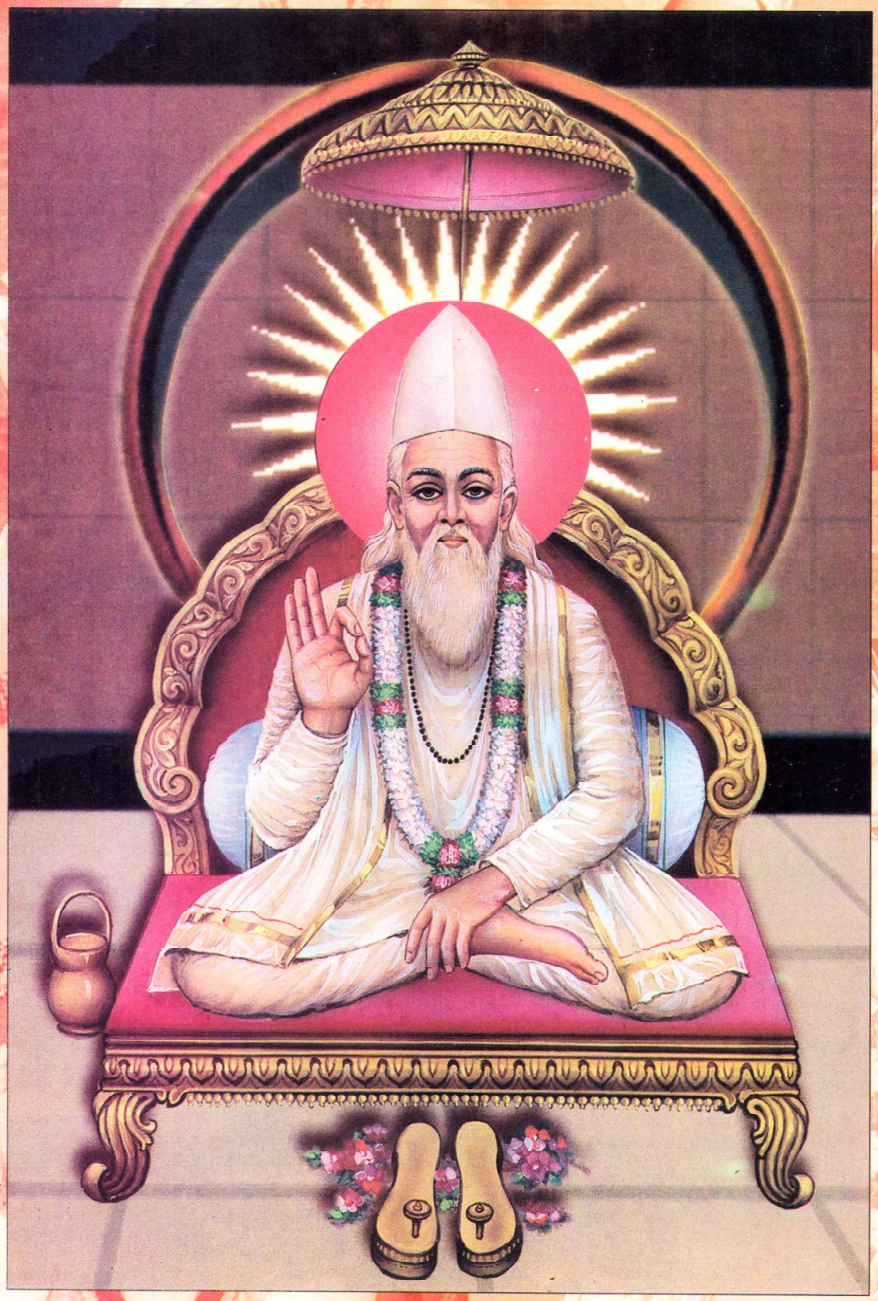

Sonaa sajjana saadhu jana,
tuti jurai sau baara ।

Durjana kumbha kumbhaara kaa,
ekai dhakaa daraara ॥

Gold, broken down in pieces, can be melted back to one piece. Kind and truthful persons after a separation can again be together. But unkind and wicked people, just like an earth pot once broken can never be put together, get permanently separated after a simple dispute.

◗ Shree Kabir Council – La Caverne, Vacoas ◗ Shree Satya Kabir Muktamaneenaam Dharmic Sabha – Pointe Aux Piments ◗ Shree Mahaprabhu Kabir Dharmasthan – Morcellement St. André

सद्गुरु कबीर साहेब जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र

पंथ श्री हजूर प्रकाशमणिनाम साहेब जी द्वारा विरचित (खरसिया)

आदौ फुल्लकुशेशय-प्रविलसत्कासारमध्येऽभवत्
काश्यां शैशवरूपिणोऽवतरणं श्रीमत्कबीरस्य वै ।
लीलामानुषविग्रहस्यनयनं नीरू-नीमाभ्यांकृतम् ;
रामानन्दमनस्विनः पुनरभूच्छिष्यत्वमस्य प्रभोः ॥१॥
पश्चाद्वादिकदम्बकुञ्जरहरे-राश्चर्यमय्योऽभवल् -
लीलाःशक्तिविकासनञ्चपुरतोमाहम्मदक्षोणिपः ।
पश्चाज्जीवनमद्भुतंकृतमभूत्कम्मालिकम्मालयोः ;
पश्चाद्देवलकस्य रक्षणमहो दूरात्कृतं वन्हितः ॥२॥
[पश्चात्कारितमद्भुतं हि जगतः संदर्शनं गस्तकम् ॥]
पारावार विघट्टनं मुररिपोरावाससंस्थापनम् ;
गोरक्षस्य ततः स्वयोगकलया दर्पोपसम्मर्दनम् ।
संसाराम्बुधि सेतुरूपमचलं संस्थाप्य धर्मं निजम् ;
अन्तर्धानमजन्मनोमगहरे जातञ्चरित्रं गुरोः ॥३॥

अथ श्रीस्वामी ब्रह्मलीनमुनिप्रणीत श्रीसद्गुरुस्मर्णाष्टकम्

यच्छक्त्या वायुरावाति सूर्योभाति शशिस्तथा ।
वाक् च स्फुरति जन्तूनां, तं कवीरं नमाम्यहम् ॥
सत्यं तथा ज्ञानमनन्तभूतमार्त्ततितोऽन्यं प्रवदन्ति वेदाः ।
तेनैकरूपो निखिलाश्रयो य स्तं श्रीकवीरं मनसास्मरामि ॥१॥
यस्मादभूत्सन्तमसाऽधिरूढात् सर्गः स्थितिः संहरणं समस्य।
वैदैकवेद्यो ह्यपि वा न वेद्य स्तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥२॥
ऋगाद्यथर्वाङ्गिरसान्तवेदाः सर्गाद्यकाले प्रभवन्ति यस्मात् ।
अवेदयत् स्वान् सकलार्थमेषां तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥३॥
सेव्यं सतां विश्वविनाशशक्तं ज्ञानं यतीनां नयनं तृतीयम् ।
येनोपदिष्टं विगतान्तरायं तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥४॥
ध्वान्तं धुवित्वा कुरुते प्रकाशं पापं पवित्वा च दधाति धर्मम् ।
यस्योपदेशः शिवदानदक्ष स्तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥५॥
क्रोधं धुनीते विदधाति शान्तिं कामं कृणीते वितनोति कीर्तिम् ।
यस्योपदेशो भुवि सुप्रसिद्धस्तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥६॥
सत्यत्वमिथ्यात्वविवेकहीनान् निःशेषदुःखार्णवसन्निमग्नान् ।
यत्पादुके तारणकर्मलग्ने तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥७॥
अन्येऽपि सन्तो विलसन्ति शास्त्रे स्वर्गं गताः पावनपावनास्ते ।
आशुद्रपुद्धर्तुमिहाकुलो य स्तं श्रीकवीरं मनसा स्मरामि ॥८॥
अनुभवति निजं सः सच्चिदानन्दभूतं ;
दहति निखिलपापं तेन ज्ञानाग्निना च।
तरति खलु भवाब्धिं जन्मदुःखादिमूलं ;
पठतिगुरुनुतिं यश्चारूब्राह्मेमुहूर्ते ॥९॥
श्रीसद्गुर्वष्टकं यस्तु, ब्रह्मलीनेन भाषितम् ।
त्रिकाले संयतोभूत्वा, पठेन्मुक्तिंलभेत सः ॥१०॥
॥इति श्री ब्रह्मलीनमुनिप्रणीतं श्रीसद्गुरुस्मरणाष्टकं सम्पूर्णम्॥

अथ श्रीस्वामी हनुमद्दासषट्शास्त्रीविरचितश्रीकबीराष्टकम्

विरक्त सुसन्त महाबोधवन्तं, जनध्वान्त हन्तारमेकं निरीहम् ।
निराबाधमाद्यं कृपालं कबीरं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥१॥
सदावेदवेदान्तवेद्यं तुरीयं, गुणातीतमच्छं परं पावनं हि ।
अनन्तं चिदाकाश रूपं कबीरं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं नमामि ॥२॥
विशुद्धं विमुक्तं शिवं संगहीनं, सुखाकारमाद्यन्त हीनं वरेण्यम् ।
अपारं सदा संविदाकाररूपं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं नमामि ॥३॥
निराधारमेकं स्वसिद्धं गभीरं, भवाब्धेः सुतीरं मनोमौलिहीरम् ।
सुधीरं सुधासागरं सत्कबीरं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥४॥
गत प्रातिमं प्राणपूज्यं प्रसिद्धं, महिम्निस्थितं स्वे सदानिर्विकारम् ।
सदाकारमोंकारगम्यं कबीरं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥५॥
समं साङ्गबोधं निरङ्गं सदङ्गं, न भूतं भविष्यन्तमावर्तमानम् ।
सदाकालिकासङ्गहीनं कबीरं, कवीद्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥६॥
जगद्येनवास्यं न वास्यं यदर्नै, निरस्तं समस्तं भवेद्यत्प्रबोधात् ।
विरक्तैः सुभक्तैः सदा ध्यायमानं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥७॥
बिनावेदनं यो न पाति प्रबोधा, अवश्यं त्यजत्येव यो ध्यायमानः ।
विरक्तेन सत्येन लभ्यं कबीरं, कवीन्द्रं मुनीन्द्रं यतीन्द्रं भजामि ॥८॥

आरती १

आरती सत्य कबीर तुम्हारी, दया करो साहेब जाऊँ बलिहारी ॥टेक॥
पहली आरती पुहुमी आये, काशी प्रगटे गुरु कहाये ॥१॥
दूसर आरती देवल थपाये, आशा रोपि समुद्र हटाये ॥२॥
तीसर आरती चरण जल ढारे, हरि के पण्डा जरत उबारे ॥३॥
चौथी आरती तुरहिं धाये, तोड़ जंजीर तीर ले आये ॥४॥
पँचवे आरती बलख सिधाये, चौरासी सिद्ध के बंध छुड़ाये ॥५॥
छठवीं आरती अविगत धारे, मुरदा से जिन्दा करि डारे ॥६॥
सातवें आरती पीर कहाये, मगहर आमी नदी बहाये ॥७॥
आठवें आरती मण्डल सिधाये, जन ज्ञानी के संशय मिटाये ॥८॥
कहँ लगि कहौं वरणि नहीं जाये, धर्मदास आरती सचुपाये ॥९॥

आरती २

आरती मँगल गाइये,सतपुरुष मनावो ।
सतपुरुष मनावो, सतपुरुष मनावो–२सतपुरुष मनावो...
आरती मँगल गाइये, सतपुरुष मनावो...॥ टेक ॥
पूर्व दिशा से बँकेजी गुरू आये–२
कलश आन धराइये, सतपुरुष मनावो....॥१॥
पश्चिम दिशा से सहतेजी गुरु आये–२
पाषाण आन धराइये, सतपुरुष मनावो...॥२॥
दक्षिण दिशा से चतुर्भुज गुरु आये–२
अमीदल आन धराइये, सतपुरुष मनावो...॥३॥
उत्तर दिशा से धर्मदास गुरु आये–२
आरती आन धराइये, सतपुरुष मनावो...॥४॥
मध्य सिंहासन सतपुरुष विराजे–२
पान प्रसाद धराइये, सतपुरुष मनावो...॥५॥
चारों दिशा से चारों गुरु आये–२
चौका आन पुराइये, सतपुरुष मनावो...॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो–२
मोक्ष परम पद पाइये,सतपुरुष मनावो...॥७॥

Scheme of Transliteration

अ	a	अं	ṁ	छ	cha	थ	tha	र	ra	ऊ	ū	ख	kha	ठ	ṭha	फ	pha	स	sa
आ	ā	अः	ḥ	ज	ja	द	da	ल	la	ए	e	ग	ga	ड	ḍa	ब	ba	ह	ha
इ	i	ऋ	ṛ	झ	jha	ध	dha	व	va	ऐ	ai	घ	gha	ढ	ḍha	भ	bha	क्ष	kṣa
ई	ī	लृ	ḷ	ञ	ña	न	na	श	śa	ओ	o	ङ	ṅa	ण	ṇa	म	ma	त्र	tra
उ	u	क	ka	ट	ṭa	प	pa	ष	ṣa	औ	au	च	ca	त	ta	य	ya	ज्ञ	gya

आचार्य महंत सर्वेश्वर दास शास्त्री

॥ सत्यनाम ॥

Satya Guru Kabir

A Quarterly Journal on the Philosophy of Sadguru Kabir Saheb.

Kabīrābd 607 Chaitra-Vaiśākha-Jyeṣtha 2062 April-May-June 2006 Vol. 2 No. 2

Founder
M. Komaldass

H. Chief Editor
Acharya M. Sant
Sarveshwar Das Shastri
Sāhitya-Vyākaraṇa-Vedānta-Sānkhyayogācārya-LLB

Editor in Chief
M. Amardass

Board of Editors
M.Poorundass
M.Ravindradass
M.Prabhatdass
Narainduth

Advisor
Rajnarain

Address
4, Mosque Road
Morcellement St. André
Plaine des Papayes
Mauritius

P.O.Box 637
Port-Louis, Mauritius

Tel. (230) 261 7708
(230) 261 7773
EMAIL: pobox637@yahoo.com

Subscription
4 Yearly Issues
Yearly Subscription Rs. 120.00
Unit Price Rs. 30.00

Printed at
Globe Printing
41, Wellington St.
Port-Louis, Mauritius
Tel/Fax (230) 208 1863

साखी - sākhī

कबीर सब जग निर्धना धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सोई जानिये, राम नाम धन होय ॥

kabīra saba jaga nirdhanā dhanavantā nahin koya |
dhanavantā soyī jāniye, rāma nāma dhana hoya ||

Kabir says: "O Brother! The whole world is poor; no one is rich; Only he is rich who has the wealth of God's name.

Commentary:
In this world people think that the person who has material wealth is prosperous, but in reality all material things are perishable and cannot be recognised as true wealth. True wealth is the name of God which is Immortal. So the person who has the welath of God's name is really rich.

कथनी मीठी खांडसी, करनी विष की लोय ।
कथनी छांडि करनी करे, विष ते अमृत होय ॥

kathanī mīṭhī khāṇḍasī, karanī viṣa kī loya |
kathanī chāṇḍi karanī kare, viṣa te amṛta hoya ||

Speech is sweet like sugar and actions are like poison to many; If, instead of speaking of good, one does good actions, the poison will turn into nectar.

Commentary:
It is very important to speak politely, but if a person speaks politely and performs good actions, he will be able to bring peace and bliss to all. Polite speech and ignoble actions bring problems. In reality, actions are more important than words.

मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर ।
श्रवन द्वार ह्वै संचरे, साले सकल सरीर ॥

madhura vacana hai auṣadhi, kaṭuka vacana hai tīra |
śravana dvāra hvai sancare, sāle sakala sarīra ||

Sweet words are like good medicine, and harsh words are like arrows; Which enter through the doors of the ear, and give distress to the whole body.

Commentary:
We have to speak truth but also politely, because many problems are created by misuse of words. Problems can often be solved if we use sweet, polite and proper words suitable to the occassion. Our words also reveal what we are.

Commentary by *ācārya Mahanta* **Jagdish Das Shastri**
Jamnagar, Gujarat, India

No part of this publication may be reprinted or otherwise reproduced without the prior permission of the chief editor. The opinions and thoughts expressed in the articles published in this journal are those of the writers and not those of the Satya Guru Kabir Committee.

सम्पादकीय

आचार्य सर्वेश्वर

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै ।
दुःखिया साहेब कबीर हैं, जागैं और रोवैं ।।

संसार में कोइ पद की नशा मे मस्त है। कोई जवानी की नशा में मस्त है। कोई धन की नशा में मस्त है। कोई बल की तो कोई विद्या की नशा में मस्त है। कोई सुरा-सुन्दरी की नशा में मस्त है। इस बेहोशी की दशा में यह मानव-जगत् भूल गया कि -

आदमी का जिस्म क्या है, जिस पर ये शैदा जहाँ ।
एक मिट्टी की इमारत, एक मिट्टी का मकाँ ।।
खून का गारा बना है, ईंट इसमें हड्डियाँ ।।
चन्द श्वासों पर खड़ा है, ये आशियाँ ।।
मौत की पुरजोर आँधी, इससे जब टकरायेगी ।
टूट करके ये इमारत, खाक में मिल जायेगी ।।

सद्गुरु कबीर साहेब एवं उनके जैसे सभी महापुरुष मानव की ऐसी दशा देखकर दुःखी होते हैं। इसलिये स्वयं कष्ट सहते हुये, लोगों के अपशब्दों को, कसौटियों को सहते हुये भी जनहित की बात करते हैं। जब माता-पिता अपने बच्चों को उनके अपकर्मों के लिये समझाते हैं तो उन्हें अच्छा नहीं लगता, किन्तु बड़े जन अपना प्रयास करते ही रहते हैं।

प्राचीनकाल, वैदिक-युग से ही ऋषि-मुनियों ने मानव जगत के उत्थान के लिये यह प्रयास किया है, कि किस प्रकार मनुष्य त्रिविधताप - १. आधिदैहिक, २. आधिदैविक, ३. आधिभौतिक से मुक्त होकर मानव जीवन के चारों परमपुरुषार्थों - १. धर्म - २. अर्थ - ३. काम - ४. मोक्ष को प्राप्त कर सके। इन उपायों को वैदिक युग में ऋचाओं में पौराणिक युग में श्लोकों में, भक्तिकाल में भजन-साखी-चौपाई-दोहों में संजोया गया। पिछले ६०८ वर्षों से सद्गुरु कबीर साहेब जी की वाणी भारत में मुख्य रूप से हिन्दी में तथा साथ ही भोजपुरी-छत्तीसगढ़ी - बुन्देली - मैथिली - गुजराती - राजस्थानी - मराठी - पंजाबी - बंगाली आदि भाषाओं में सतों - भक्तों, बड़े-बड़े गायक- गायिकाओं द्वारा गाये जाते रहे हैं। भारत से बाहर मॉरीशस, नेपाल, भूटान, फिजी - जाम्बिया - त्रिनिडॉड - ब्रिटेन- अमेरिका - कनाडा - रूस - पाकिस्तान - हालैण्ड आदि बहुत से देश जहाँ हमारे कबीर-अनुयायी एवं हिन्दू समाज हैं द्वारा गाये व सुने जाते हैं। विद्वान-गण इन्हीं ऋचाओं-श्लोकों एवं भजनों के आधार पर ही प्रवचन करते हैं। अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को प्रस्तुत करते हैं।

सद्गुरु कबीर साहेब जी ने सन् १३९८ से सन् १५१८ तक के अपने १२० वर्ष के जीवन काल में हिन्दू संस्कृति के महान् ग्रन्थों की ऋचाओं, संहिताओं, उपनिषदों, पुराणों, नीति शास्त्रों के सारतत्त्व को लगभग ४० हजार साखियों तथा लगभग ६० हजार भिन्न-भिन्न भाषाओं एवं छन्दों में भजनों द्वारा प्रस्तुत किया जिसमें सबसे अधिक हिन्दी भाषा में सम्प्राप्त है। दिनभर के थके मानव-मन को प्राचीनकाल से संगीत ने शान्ति एवं आनन्द प्रदान किया है। मॉरीशस में भी हमारे पूर्वज शाम को बैठकर इन भजनों को झाल-खंजड़ी-लोटा-थाली बजाकर गाते एवं सुनते थे। जिससे न केवल शारीरिक थकान अपितु मानसिक वेदना भी दूर होती रही है। आज भी यह परम्परा आधुनिकरूप लेकर, संगीत के वाद्यों के साथ चल रही है। प्रस्तुत अंक में सद्गुरु के भजनों में निर्गुण-होली-सोहर आदि का समावेश है। ये भजन प्रायः सत्संगों में गाये जाते हैं तथा इनके कैसेट भी मिलते हैं। भजनों को जब हम ध्यान-पूर्वक गाते या सुनते हैं तो अपने-आप ही बहुत से मन के संशय दूर हो जाते हैं।

इस "भजन विशेषाङ्क" को प्रस्तुत करते हुये सतलोक वासी परम पूज्य गुरुदेव संत किशोरदास जी साहेब, श्रद्धेय पंथश्री हजूर उदित नाम साहेब, जी, वर्तमान श्रद्धेय पंथ श्री हजूर मुकुन्दमणिनाम साहेब जी को श्रद्धा पूर्वक स्मरण कर रहा हूँ। जिनके आशीष हम पर सदा से हैं। २००४ में हरद्वार से श्रद्धेय स्वामी अभिरामदास जी साहेब तथा २००५ में हमारे परम आत्मीय आचार्य संत रामजीवनदास साहेब अपने शिष्य श्री योगेन्द्रदास शास्त्री साहेब के साथ मॉरीशस आये और हम सबको प्रोत्साहन-आत्मीयता और शुभकामना प्रदान किये।

ये भजन हिन्दी और अंग्रेजी लिपि में दिये जा रहे हैं। कबीर पंथ के ही प्रकाण्ड विद्वान् सतलोकवासी श्रद्धेय स्वामी बलतीन मुनि साहेब द्वारा रचित "श्री कबीर महिम्न स्तोत्र" एवं "श्री कबीराष्टकम्" हैं। पत्रिका-परिवार द्वारा इन महापुरूष को हम श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे हैं। सत्यपुरूष के १०१ नाम हैं। जिसे संत-हंस जन प्रतिदिन पाठकर दिवस का शुभारम्भ कर सकेंगे। सम्पादक मण्डल आप सभी महन्तों-सन्तों भक्त-हंसजनों के सहयोग शुभाकाँक्षाओं के लिये आभारी है।

॥ सर्वेषां शुभं भूयात् ॥

सतयुग सतसुकृत गुरु आये, त्रेता नाम मुनीन्द्र धराये ।
द्वापर करुणामय कहलाये, कलियुग कबीर जीव मुक्ताये ।।

धर्मग्रन्थों-शास्त्रों में तथा समाधी में अनुभव की एकता

पूज्यस्वामी अभिरामदास जी महाराज, हरद्वार - भारत

महर्षि वेदव्यास जी ने गीता एवं श्रीमद् भागवत् इत्यादि ग्रन्थों में जो लिखे हैं, वे प्रायः मस्त फक्कड़ संत सद्गुरु कबीर साहेब जी की वाणियों में बहुत सी बाते एक जैसी ही लगती हैं। जहाँ भागवत् पुराण में श्री कृष्ण ने उद्धव से कहा :-

प्रायेण मनुजा लोके, लोकतत्व विचक्षणाः ।
समुद्धरन्ति ह्यात्मानमात्मनैवा शुभाशयात् ।।
भा. ११-७-१९

श्रीकृष्ण ने कहा - हे उद्धव ! संसार में जो मनुष्य विचार करता है कि इस जगत का स्वरूप क्या है? इसमें क्या हो रहा है? संसार से मेरा सम्बन्ध क्या है? इत्यादि बातों का विचार करने में निपुण हैं वे चित्त में भरी अशुभ वासनाओं से, संकल्पों के प्रवाह से अपने आपको स्वयं अपनी विवेक शक्ति से बचा लेते हैं। इसी बात को सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा है :-

बहुबंधन से बाँधिया, एक बेचारा जीव ।
की बल छूटे आपने, की रे छोड़ावे पीव ।।

जहाँ भागवत-माहात्म्य में नारद जी अपने गुरुवों सनकादि से कहते हैं :-

भाग्योदयेन बहुजन्मसमर्जितेन, सत्संगमं च लभते पुरुषो यदावै ।
अज्ञानहेतुकृतमोहमदान्धकार, नाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः।।

जब करोड़ों-जन्मों का सञ्चित पुण्य कर्मों के उदय होने से मनुष्य को सत्संग मिलता है। तब उसके अज्ञान जनित मोह और मदरूप अन्धकार का नाश करके विवेक उदय होता है। इसी बात को सद्गुरु कबीर साहेब जी कहते हैं:-

कबीर दर्शन संत के, बड़े भाग्य दरशाय ।
जो होवे शूली सजा, काँटे से टरि जाय ।।
कबीर दर्शन संत के, दिन में करे कई बार ।
कबीर दर्शन संत के, ऊतरे भवजल पार ।।

जो लोग सद्गुरु संतों के सत्संग-भजन से दूर हैं, उनके लिये सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं :-

खसम बिनु तेली को बैल भयो ।
बैठत नाहिं साधु की संगत, नाधे जन्म गयो ।।
बहि-बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, यमको दण्ड सह्यो ।
धन दारा सुत राज काज हित, माथे भार गह्यो ।।
खसमहि छाँड़ि विषय रंग राते, पाप के बीज बयो ।
झूठी मुक्ति नर आस जीवन की, उन्ह प्रेत को जूँठ खयो ।।
लख चौरासी जीव जन्तु में, सायर जात बह्यो ।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, उन श्वान को पूँछ गह्यो ।।

इसी विषय पर भागवत् द्वितीय स्कन्ध में कहा गया :-

श्वविड्वराहोष्ट्र खरैः संतुतः पुरुषः पशुः ।
न यत् कर्णकथापेतो, जातुनाम गदाग्रजः ।।
२-३-१९

भावार्थ :- जो मानव शरीर प्राप्त करके भी ईश्वर की आराधना नहीं करते ऐसे भक्तिहीन लोगों की चार प्राणी बहुत प्रशंसा करते हैं। अभक्तों की कौन प्रशंसा करता है? जो मानव शरीर में पशु आचरण करते हुये विचरण करते हैं। ऐसे मनुष्यों की चार पशु ही प्रशंसा करते हैं। पहला प्रशंसक कुत्ता है। वह किसकी प्रशंसा करता है? जो छोटी-छोटी बातों पर लोग झगड़ा करते हैं, गाली-गलौज करते हैं। एक-दूसरे को मारने को तैयार रहते हैं, उन झगड़ालू प्रवृत्ति के लोगों को देखकर कुत्ता बहुत प्रसन्न होता है। वह विचार करता है कि शक्ल बदल गया है। पर है हमारे ही खानदान के। जैसे हम लोग आपस में एक-दूसरे से झगड़ते हैं, वैसे ही ये भी आपस में झगड़ते हैं। दूसरे को सुखी देख जलन करते हैं।

दूसरा प्रशंसक है - विड् वराह गाँव का शूअर, वह किसकी प्रशंसा करता है? जिस मनुष्य के जीवन का एक ही लक्ष्य है - खाओ, पीओ-मौज उड़ाओ। ऐसे लोगों को देखकर शूअर खूब प्रसन्न होता है। मेरा भी काम पेट भरना है। हम दोनों का एक ही लक्ष्य है। इसलिये प्रसन्न है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं :-

खाया पीया अघाय के, सोया पाँव पसार।
भोंदू कुछ जाने नहीं, को हम को संसार।।

तीसरा प्रशंसक है ऊँट। ऊँट किसकी प्रशंसा करता है? जो थोड़ा पद पा कर के थोड़ा सा धन प्राप्त करके, थोड़ी सी विद्या पा कर के इतराने लगते हैं। ऊँट की तरह मुँह उठा करके चलने लगते हैं। संत महापुरुषों को नमन करने में उन्हें लज्जा लगती है, ऐसे अभिमानियों को देखकर ऊँट बहुत प्रसन्न होता है। ये हैं तो हमारे ही खानदान के। चाल तो बिल्कुल हमारे जैसा ही है। हम भी मुँह उठा कर चलते हैं ये भी मुँह उठाकर चलते हैं। सद्गुरु कबीर साहेब जी कहते हैं :-

कबीर गर्व न कीजिये, काल गहे हैं केश ।
ना जाने कब मारि हैं, क्या घर क्या परदेश ।।

चौथा प्रसंशक गधा है। ये किसकी प्रशंसा करता है? जो जीवन पर्यन्त गृहस्थी का ही भार ढोते हैं। नमक-तेल-इन्धन में ही फँसे रहते हैं। वृद्धावस्था में शरीर जर्जर हो जाता है, शरीर की दुर्दशा होती है। फिर भी बेटा-बेटा कहकर चिल्लाता है। नाती-पोते गालियाँ देते हैं - "बुड्ढा मरता नहीं, जब देखो चिल्लाता रहता है, न सोता है न सोने देता है"। ऐसे दुर्दशा ग्रस्त लोगों को देखकर गधा प्रसन्न होता है कि मैं भी अपने मालिक का खूब जिन्दगी भर-भार ढोया। जब शरीर शिथिल हो गया तो मालिक ने डण्डे मार कर घर से निकाल दिया, अब मैं दर-दर की ठोकर खा रहा हूँ। जब तक स्वस्थ रहा, इन अज्ञानी संसारियों की तरह भार ढोता रहा, और जब शरीर की क्षमता समाप्त हो गई तो डण्डा मार कर भगा दिया गया, वही हाल तुम्हारा भी हो रहा है। वृद्धावस्था में भी चिन्ताओं का ही भार ढो रहे हो। तुम भी मेरे ही बिरादरी के हो। इन्हें देखकर गधा खूब प्रसन्न होता है क्योंकि इनमें उसे अपनी जातीयता के लक्षण परिलक्षित होते हैं। जहाँ सद्गुरु कबीर साहेब जी ने कहा :-

जो तू चाहे मुझको, छाँड़ सकल की आस ।
मुझही ऐसा हो रहो, सब सुख तेरे पास ।।

इसी बात को भागवत् के दूसरे स्कन्ध में शुकदेव जी ने कहा :-

अकामः सर्वं कामो वा, मोक्षकाम उदारधीः ।
तीव्रेण भक्तियोगेन, यजेत पुरुष परम् ।।

भाव है कि, जो बुद्धिमान पुरुष है वह चाहे निष्काम हो या समस्त कामनाओं से युक्त हो, उसे तो तीव्र भक्ति योग के द्वारा परमतत्त्व का ही अनुभव करना चाहिये।

सद्गुरु कबीर साहेब ने मानव जीवन को बड़ा ही दुर्लभ कहा है :-

मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार ।
पक्का फल जो गिर पड़ा, बहुरि न लागे डार ।।बीजक।।

इसी को भागवत् के ११वें स्कन्ध के नौयोगेश्वरसम्वाद में कहा :-

दुर्लभो मानुषदेही, देहीनाक्षणभंगुरः ।।

अर्थ यह है कि, यह मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। मिल भी जाय तो क्षणभंगुर है। कभी भी आपका साथ इससे छूट सकता है। सद्गुरु पुनः कहते हैं :-

आज काल्ह दिन कइंक में, स्थिर नाहिं शरीर ।
कहहिं कबीर कस राखि हो, काँचे बासन नीर ।।बीजक।।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं :-

मानुष तेरा गुण बड़ा, माँस न आवे काज ।
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज ।।

इसी बात को भागवत् माहात्म्य में कहा :-

देहेऽस्थि मांस रूधिरेऽभिमतिं त्यजत्वं,
जाया सुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभंगनिष्ठं,
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः।।५-७१

इस शरीर में हड्डियों के टेढ़े तिरछे खम्भे लगे हैं। माँस और नस नाड़ियों से बँधा है। खून, टट्टी, पेशाब से भरा है। ऊपर से चमड़ी मढ़ दी गई है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं :-

चलहु का टेढ़ो-टेढ़ो-टेढ़ो ।
दशहुँ द्वार नरक भरि बूड़े, तू गंधी को बेड़ो ।।बीजक।।

यह शरीर क्षणभंगुर है कभी-भी छूट सकता है। इसलिये राग त्याग कर जीवन जीवो।

जो लोग पूरे जीवन अन्धविश्वास या जड़ उपासना में ही लगे रहते हैं, उनके लिये सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं:-

पीतर-पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना ।
....., आतम खबरि न जाना ।।

इस आत्म-तत्त्व का उपदेश भागवत् में श्रीकृष्ण भगवान् ने किया :-

यस्यात्म बुद्धिः कुणपे त्रिधातुके,
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इत्यधीः ।
यत्तीर्थ बुद्धिः सलिले न
कर्हिचेज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।।

भा. १०-८४-१३

जो मनुष्य बात-पित्त और कफ इन तीन धातुओं से बने हुये शव तुल्य शरीर को ही आत्मा मानता है, स्त्री-पुत्रादि को ही अपना मान बैठा है और मिट्टी-पत्थर-काष्ठ आदि पार्थिव विकारों को ही ईष्टदेव मानता है। जो केवल तीर्थों में स्नान कर लेने मात्र से ही कल्याण मानता है, उसे भगवान कृष्ण कहते हैं कि यह पशुओं में भी नीच गधा है।

यहाँ कोई सोचे कि मूर्ति पूजा का खण्डन है, ऐसा नहीं है। ईष्टदेव की मूर्ति-फोटो रखो, उनके आदर्शों को याद रखो, केवल पूजा की ही वस्तु मत मान बैठो। तीर्थों में जाना अच्छा है। लेकिन वहाँ जाकर संतों महापुरुषों का सत्संग करो, न कि केवल स्नान कर घर भागो।

इन सब बातों का विचार करने से पता लगता है कि सद्गुरु कबीर साहेब कितने बड़े ब्रह्मवेत्ता थे। वे भले ही अपने हाथ से कुछ भी नहीं लिखे :-

मसि कागज छुयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ ।
चारों युग की महातम, मुखहिं जनाई बात ।।

सद्गुरु कबीर साहेब बोलते गये, शिष्यगण-आचार्यगण लिखेत गये और आज उनका अनुपम विशाल साहित्य हमें सुलभ है। ऐसे हमारे परम आराध्य सद्गुरु कबीर साहेब जी को त्रयबार साहेब बन्दगी।। □

Exhibition on the Life of Sadguru Kabir Saheb

The Shree Kabir Council (of Mauritius) had organised an Exhibition on the "Life of Sadguru Kabir Saheb" at the Town Hall of Vacoas-Phoenix in Mauritius on Saturday 18th of June from 10.00 a.m. to 4.30 p.m. In the occasion of the Kabir Prakatya Mohotsav, chatra, chanvar, hand written books, main granthas of Kabir Panth, Mahanti Panja, sheli, topi, puja utensils and photos of past Mahants, symbol of the chawka arati and 44 A3 size pictures, depicting events in the life of Satguru Kabir Saheb with brief descriptions were displayed for public viewing. At 10.00 am the opening ceremony was held in the presence of Mahant Komaldass, Mahant Sant Sarveshwar Das Shastri, Mahant Amardass, Dr. Baichoo, the Mayor of Vacoas-Phoenix Shree Vedanand Mussoodi, Sadhu Satanand, Sadhu Adinathdass and the President of Shree Kabir Council Shree Lallman Kumar Ramburran.

In this same auspicious occasion, during the day at 2.00 p.m. a cultural programme with bhajans and pravachans was held. This ended with an arati at 4.30 p.m.
This programme was attended by all the Mahants of Mauritius - Shree Charandas Saheb, Shree Komaldass Saheb, Sant Shree Gurusharan Das Shastri Saheb, Sant Shree Sarveshwar Das Shastri Saheb, Shree Prabhatdass Saheb, Shree Dineshdass Saheb, Shree Amardass Saheb, Shree Krishnadass Saheb, Shree Lockdass Saheb and the Minister of Agriculture Shree Nundkumar Bodha(now, the Leader of Opposition), and MP Shree Shiram Sakharam. Other guests were Pandit Dharamveer Ghoora, the President of the Hindi Lekhak Sangh, Shree Ajameel Matabadal, the Secretary of Hindi Pracharini and other important scholars.

The Bhajan Mandali of Shree Kabir Council, Kabir Panthi Mahasabha, Shree Satya Kabir Muktamaneenam Dharmic Sabha and Dharmadass Abeelack Kunja presented the beautiful Kabir bhajans.

The Kabir Prakatya Divas was celebrated on Tuesday 21st of June 2005 by a Chawka Arati performed by Mahant Sant Sarveshwar Das Shastri at the Shree Kabir Council Mandir at La Caverne, Vacoas at 11.30 am. Prasad and lunch was served on this great occasion. □

।। श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।।

।। अथ सद्गुरु श्री कवीरमहिम्नःस्तोत्रम् ।।

पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मलीन मुनि जी महाराज विरचित

सन् १९६० सूरत गुजरात-भारत

।। १ ।।

शान्ताकारं सकलसुहृदं पुण्यपुञ्जं सुधीशम् ;
सस्मेरास्यं सततमभितोऽखण्डवात्सल्य युक्तम् ।
लक्ष्मीनाथं श्रुतिनयनपरं छात्रवृन्दैः सुजुष्टम् ;
नत्वा विद्यागुरुवरमहंसद्गुरुं स्तौमि भक्त्या ॥

।। २ ।।

महिम्नः स्तोतुं ते नरमुनिसुराणामपिगिरो ;
न सम्यक् शक्तास्तद्गुरुवर! कथं स्तौमि नितराम् ।
अगम्यं वाचां त्वामिहतदपि भक्त्याव्यवसितः ;
पुनामि स्वा वाणी गुणकथनपुण्येन भवतः ॥

।। ३ ।।

अचिन्त्यानन्त्यत्वन्महिजलधेः पारगमनम् ;
सदाध्यानावस्थैः सुकृततनतिंनिष्ठश्चकठिनम् ।
तदुद्योगोऽयं मे प्रगलदुडुपेनाब्धितरणम् ;
त्वयाऽऽयुक्तोऽस्मिंस्तत्कुरुमयि कृपां पारगतये ॥

।। ४ ।।

सदाजुष्टं सद्भिर्यतिनृपतिसंसेवितपदम् ;
अतर्क्यैश्चर्यंत्वामतिशयितमन्दारविटपम् ।
सदाधारं शान्तं सकलसुखदं शान्तिसदनम् ;
न जानेऽन्यं कञ्चिद्भवभयहरं तापशमनम् ॥

।। ५ ।।

स्वयं स्वात्मारामोरमयसि सतः शान्ति विपिने ;
जनान्तःस्थं गाढं शमयसि तमः पुञ्जनिकरम् ।
निरालोके लोके दिशसि सततं सत्पथततिम् ;
परानन्दं नित्यं विकरसि मुदा विज्ञसदसि ॥

।। ६ ।।

यदारब्धं म्लेच्छैर्द्विजमुनिसतां प्राणहननम् ;
गवां घातोनित्यं निजगृहहता आर्यललनाः ।
विनष्टाः सद्ग्रन्थाः सुरसदनसम्पातमनिशम् ;
मुदा सस्नुस्ते वै द्विजसुजनसूत्रोष्णपयसा ॥

।। ७ ।।

उदीक्ष्यैतत्कृत्यं निरयगतजीवोऽपि सततम् ;
भृशं व्रीडापन्नोऽधिगयदिवतान् भूतनिवहः ।
यदार्तोनादःसद्धृदयकुहरात् प्रादुरभवत् ;
परं क्षुब्धो लोकः स्वयमपिपरेशःकलुषितः ॥

।। ८ ।।

अथस्वीयां वाणीं स्मृतिपटलमानीय मनसा ;
तदब्धेश्चोद्धर्तुं सुकृति पथमानेतुमभितः ।
क्षणादाविर्भूतोमनुजतनुधारी व्रतधर- ;
स्त्वमेवाभूः सम्यग् गुरुवर ! सतां रक्षणकृती ॥

।। ९ ।।

परेशःसाक्षात्सत्सुकृतशुभनाम्नाकृतयुगे ;
सुधामय्यावाचा सकलसुखदःसन्ततमभूः ।
मुनीन्द्रस्त्रेतायामथ च करुणाद्वापरयुगे ;
कलौविख्यातः सद्गुरुवरकवीरःपरपुमान् ॥

।। १० ।।

निरीहःसँच्छास्तानिरवधिगुणोनिर्गुणविभु- ;
र्निराधारोधत्सेऽचरसुचरमुच्चावचभुवम् ।

अजन्मा भक्तानां निरतिशयशान्त्यैव जनुषे ;
अतर्क्यैश्वर्यन्ते नहि प्रकृतितन्त्राः प्रभुधियः॥

।। ११ ।।

सदासिद्धार्थास्तेननु सदसि देवासुरनृणाम् ;
प्रवर्तन्ते वाचः सुरगुरुमनोविस्मयकृतः ।
ततोभक्तिश्रद्धाभरपरमभावेन मनसा ;
गृणन्तोऽभूवँस्ते कृतिषु सफलास्त्वत्सुकृपया ॥

।। १२ ।।

विधेयोविश्वस्तेऽपरिमितगुणानामधिपते !
अतस्त्वं लोकानां परमकरुणामाशु तनुषे।
त्रयीसिद्धासिद्धिर्भवतु फलदाऽह्नाय जगताम् ;
इति ध्यानावाप्तबहुविधमचिन्त्यं तव वपुः ॥

।। १३ ।।

त्रिलोके विख्याता त्रिदशपतिमान्या हरिप्रिया ;
परस्यास्तस्यास्त्वंसततमनुगायाजनहृदि।
विना भेदं लोके नियतवरदानव्रतधरो ;
दयामूर्त्तिः साक्षाद् भुवि विजयसे सद्गुरुवर! ॥

।। १४ ।।

महाकालाक्रान्तं त्रिविधभवतापाकुलहृदम् ;
दिवारात्रं भोगेकृतबहुविधासङ्गमनिशम् ।
जगन्मोहग्रस्तं प्रबलमदमातंगजगतिम् ;
कृपापारावारो दिशसि सततं सत्पथततिम् ॥

।। १५ ।।

निजेच्छातः सम्यक् सकलसुधियाऽचिन्त्यरचनम् ;
विरच्यान्तः स्यूतोभुवनमसितीलापरवशः ।
पुनर्भूत्वा लोके ननु गुरुवरो मुक्तिसुखदः ;
महिमनस्तेपारं क इहकृतिना वेद निखिलम् ॥

।। १६ ।।

जगत्पूज्यः पूजाविधिपरवितानश्च निखिलः ;
स्वयं धर्मोधर्म्यस्त्वमसिकुलजात्यादिषु गतः ।
त्रिधारूपं साक्षाद्विविधमथरूपं तव जगत् ;
त्रिधा भक्त्या भक्तो व्रजति नियतं त्वां परपदम् ॥

।। १७ ।।

जनकृत्याप्तैनो विपुलवनदावानलसदृक् ;
भवाम्भोधि पारे सुलघुगतये ह्युत्तमतरी ।
परानन्दास्वादप्रदपरतरं साधनमहो ;
त्वदङ्घ्रेः सेवासद्गुरुवर ! सदा शान्ति सुखदा ॥

।। १८ ।।

यदात्वार्य्यानार्य्यास्त्वयिनिजधियाद्वेषमगमन् ;
भुवि भ्रान्त्यापन्ने निखिलजनमोह शमयितुम् ।
विभाज्यान्ते देहं शुभकुसुमपुञ्जेन जगताम् ;
मनोविस्माप्य द्राक् भुवनगुरुताव्यक्तिमकरोः ॥

।। १९ ।।

क्वचिदध्यानासक्तः क्वचिदपि च नेतृत्वचरितम् ;
क्वचित्लक्ष्यं लोकेरथ पुनरलक्ष्यं तव वपुः ।
क्वचिद्भिक्षावृत्तिः क्वचिदपि नृपैः सेवितपद् ;
चरित्रं ते नूनं गुरुवर ! विमोहाय कुधियाम् ॥

॥ २० ॥

तनौ संस्थे हंसे यतिभिरनिशंध्याननिरतैः ;
कृतान्तः सद्वृत्या शमित परकृत्याप्लुतिवशात् ।
न लेभे शान्तिस्त्वच्चरणविमुखैःकोटिकृतिभिः ;
सतां संसिद्धिस्तत्तवपरमभक्त्यैव भवति ॥

॥ २१ ॥

तवाश्चर्यकृत्यं विमलतरवाक्यञ्चनिखिलम् ;
कृपादृष्टिःसाक्षात्परमपददात्रीतनुभृताम् ।
सदाशान्तिमुद्रावितथपथहन्त्री सुकृतिनाम् ;
पुनीतंत्वत्सर्वं ममविमलमन्तःप्रकुरुताम् ॥

॥ २२ ॥

न वन्दे नित्यंत्वच्चरणयुगलद्वन्द्वधुतये ;
न चास्तुंशश्वन् मृदुतनुलतानन्दन वने ।
नवाकुम्भीपाकाद्यभयवरलाभाय नितराम्;
परं भावे भावे त्वयि पररतिं लब्धुमनिशम् ॥

॥ २३ ॥

शिशुः सन् पञ्चाब्दः स्वगुरुमकरोर्यद्यतिवरम् ;
द्विघारूप धृत्वा ननु चकितवांल्लोकमखिलम् ।
परस्यासीत्पुंसस्तव न तदपेक्षाऽपि तदपि ;
महत्त्वं वै **तस्मिन्श्रुतिपथसुरक्षा** च फलति ॥

॥ २४ ॥

सुदुस्तारेऽमुष्मिञ्जगति दुरितौघैरभिहितान् ;
गतानन्ताब्दान्तर्निजकृतकृतीनां फलभुजः ।
कथञ्चित्सद्भाग्यात्तव चरणसुच्छायनिरतान् ;
पुमर्थप्रादान व्रतधरगुरो ! रक्षसि जनान् ॥

॥ २५ ॥

अपारे संसारे बहुविकृतिकृत् खिन्नमनसा ;
विरागापन्नस्तेकथमपि भजे पादयुगलम् ।
तदाविघ्नौघोमेऽहमहमिकया धावतिहृदि ;
वृणीतांतन्मांयत्नुदतु न पुनर्विघ्न निवहः ॥

॥ २६ ॥

नचादिर्नान्तस्ते वपुरपिन ते प्राकृतमहो ;
अगम्यं ते कृत्यं ननु कृतधियां विस्मयकरम् ।
स्वभक्तत्राणार्थं प्रकटसि तनुं सर्वरुचिराम् ;
मदन्तस्तां द्रष्टुं गुरुवर! सदोत्लासि नितराम् ॥

॥ २७ ॥

अदिव्यो दिव्यो वा यवनकुलजो हिन्दुरथवा ;
अकुण्डः कुण्डो गोलक इति तथाऽगोलक इति ।
कुविन्दोऽथान्यो वा त्वयि भवतुवाक्कुण्ठितधियाम् ;
परन्त्वेतत्सत्यं नहि किमपि यत्त्वं न भवसि ॥

॥ २८ ॥

न योगस्यापेक्षा विधिवदभियुक्तैकमनसा ;
न वा वैराग्यस्याप्यथ शमदमादेरपि विधेः ।
परं संसाराब्धेस्तरणतरणिं भुव्युपदिशन् ;
स्वभक्तानां त्राता जगति सततं त्वं विजयसे ॥

॥ २९ ॥

परं प्राकट्ये ते बहु विवदतां तथ्यमिति यत् ;
क्रमाद्वासंदृष्ट्वा शुभदचिरधर्मस्य विपुलम्
वचः स्वं संस्मृत्याखिलजगति तद्रक्षणमतिः ;
स्वधाम्नः साक्षात्त्वं परमपुरुषःस्वाविरभवः ॥

॥ ३० ॥

रसेषुवेदेन्दौ ललितललिते वत्सरगते ;
शुभे सम्पूर्णेन्दावरुणसमये ज्येष्ठमिलिते ।
धृताकारं तेजो लहरकमले चन्द्रदिवसे ;
व्यराजो बालः सँश्चकितचकितं कस्य न मनः ॥

॥ ३१ ॥

पराश्चर्यन्त्वेतत्सुरमुनिऋषीन्द्राः समविदन् ;
ततस्त्वं सर्वस्मिन् त्वयि च निहितं सर्वमनिशम् ।
इति स्तुत्वाचोचुर्ननु समगमद् ब्रह्मपरमम् ;
अतो विद्मस्तत्त्वत्वमसि परतत्त्वं जनिमताम् ॥

॥ ३२ ॥

तवैश्वर्यंज्ञातुं बहुविधमुपायं कृतवताम् ;
मनीषा सुज्ञानां सततचकिता मुह्यति खलु ।
अभव्यानामस्मिन् प्रसरतु कथं कुण्ठितमतिः ;
स बोद्धा सद्भाग्यो भुवि मतिमतां बोधयसि यम् ॥

॥ ३३ ॥

श्रुतौ गीतेऽद्वैते कथमपि भवेत् सन्मतिरतो ;
मया त्यक्तं सर्वं तव सुकृपया नाथ ! नियतम् ।
अनिर्वाच्या माया तदपि समये मां व्यथयति ;
शरण्य स्वामिंस्तद्वितर सुमतिमेऽतिविमलाम् ॥

॥ ३४ ॥

सुरनरऋषिवृन्दैः संस्तुतस्यात्मलब्धैः ;
प्रथितगुणमहिम्नः सद्गुरोः प्रेष्ठभक्त्या ।
यतिवरगणमान्यो ब्रह्मलीनाभिधानो ;
विविधविषयरम्यं स्तोत्रमेतदध्यकार्षीत् ॥

॥ ३५ ॥

त्रिभुवनतलसंस्थः पासुपुञ्जःकथञ्चित् ;
गणयितुमिहशक्यो वृष्टिविन्दुश्चयत्नात् ।
न खलु तव गुणानां कश्चिदस्ति त्रिलोके ;
विपुलमहिमभाजां पारमेतुं समर्थः ॥

॥ ३६ ॥

कालपाशमोचकं सुशर्मशान्तिदायकम् ;
सत्यसेतुपालकं सुबुद्धिभक्तिसिद्धिदम् ।
प्रसन्नचारुविग्रहं स्तुवन् हृदा तु सन्ततम् ;
सद्गुरुं नरो लभेत शाश्वतं पदं ध्रुवम् ॥

॥ ३७ ॥

सकलविधिविहीनो मन्दबद्धिः क्वचाहम् ;
ऋषिमुनिमतिगम्यं ते चरित्रं क्वचास्ते ।
उचितमनुचितं वा गुम्फितं भक्तिभावात् ;
लसतु चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥

॥ ३८ ॥

धरित्रीतल विज्ञवृन्दैर्विमुक्तं; यदासेवनान्नूनमज्ञानबन्धात् ।
समस्तं विनादैन्यमायुश्चयुक्तं; स दैन्यान्मदीष्टंपुमर्थं कवीरः॥

॥ ३९ ॥

अभीष्टसिद्धयै निखिलैर्नुतंत्वाम्; नमामि सर्वेप्सितदानमूर्तिम् ।
कवीरसंज्ञंनिगमान्तवेद्यम् ; गमागमाद्यन्तकरं समन्तात् ॥

॥ ४० ॥

नास्तिगीतासमं गानं, नोज्ञानात्साधनंमहत् ।
नैव मोक्षात् परं लक्ष्यं, नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥

॥ ४१ ॥

इतीयंवाङ्मयी पूजा, श्रीमत्सद्गुरुपादयोः ।
भक्त्यार्पिता तया नित्यं, प्रीयतां मे सदा गुरुः ॥

॥ इति श्रीब्रह्मलीनमुनिप्रणीतं सद्गुरुश्रीकवीरमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

एकोत्तरी-भजन-शब्द-साखी-निर्गुण-होली-सोहर
मूल मन्त्र-ध्यान

ओऽहम्, सोऽहम्, जोऽहम्, कोऽहम्, पोऽहम् ।
आदि पोऽहम्, अन्त पोऽहम्, मध्य पोऽहम् भया प्रकाश ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । यह पाँच नाम सतगुरु से पावे, सुमिरत हंस सतलोक सिधावे॥

अथ एकोत्तरशत सत्यपुरुष नाम

[१]अजर [२]अचिंत [३]अकह [४]अविनाशी । [५]आदिब्रह्म [६]अमरपुरवासी ॥
[७]अदली [८]अमी [९]अनेह [१०]अजावन । [११]आदिनाम [१२]सतसुकृत गावन ॥
[१३]परमानन्द सो [१४]अखिल सनेही । [१५]सत्यनाम [१६]सतपुरुष [१७]विदेही ॥
[१८]निहकामी [१९]निहअक्षरवन्ता । [२०]अविगत [२१]अमर [२२]अपार [२३]अनन्ता ॥
[२४]अचल [२५]अभेद सु [२६]अन्तरजामी । [२७]गुरुतम [२८]अगुन अछे [२९]विश्रामी ॥
[३०]अगम [३१]अगोचर [३२]अलख विधाना । [३३]अभय [३४]अगाह सु [३५]पुरुषपुराना ॥
[३६]दीनबन्धु [३७]करुणामय सोई । [३८]दयासिन्धु [३९]हंसनपति होई ॥
[४०]अधमउधारन [४१]मंगलकारी । [४२]हीरंबर मुनि [४३]ब्रह्मप्रसारी ॥
[४४]अरूप [४५]अथाह [४६]अनाहदराता । [४७]जोगजीत [४८]सन्तनसुखदाता ॥
[४९]प्रकाशात्म [५०]मुक्तगति सोई । [५१]सच्चिदानन्द [५२]उजागर होई ॥
[५३]जोगसंतायनपति [५४]सुखसागर । [५५]सर्वतीत [५६]अमिअंकुर आगर ॥
[५७]विश्वात्मा [५८]पुरुषोत्तम कहिये । [५९]सत्यलोकपति [६०]विभुमन गहिये ॥
[६१]सर्वदर्शन और [६२]मुनीन्द्रा । [६३]अमी द्वीप [६४]विजितात्म महेन्द्रा ॥
[६५]सर्वमयी औ [६६]सदासनेही । [६७]भक्तराज [६८]पिउ गावे जेही ॥
[६९]सतसन्तोष औ [७०]शब्दसरूपा । [७१]प्राणनाथ [७२]सद्गुरु जु अनूपा ॥
[७३]जन्मनिवारण [७४]बन्दीछोरा। [७५]शीलरूप [७६]शीतल जु बहोरा ॥
[७७]अजगैबी औ [७८]मुक्तिप्रदायक । [७९]नामपरायण [८०]ख्यातसुनायक ॥
[८१]सन्तोषप्रिय [८२]प्राणपियारा । [८३]स्थिरनामी [८४]सतसाहिब धारा ॥
[८५]सोहंशब्द [८६]अभयपददाता । [८७]हंससोहंगम नाम विख्याता ॥
[८८]पोहम् द्वीप मंडन अधिकाई । [८९]हीरंबर डोरी रहि छाई ॥
[९०]अमोल [९१]असोच [९२]असंशय [९३]धीरा । [९४]सारनाम [९५]अडोल शरीरा ॥
[९६]सबयोगाश्रय [९७]कवि है सोई । [९८]धर्माध्यक्ष [९९]परमातम होई ॥
[१००]सन्तगती औ [१०१]शान्तीदायी । कबीर एकोत्तरशत ये गाई ॥

एकोत्तरी की महिमा

ये सबनाम रटूँ प्रभु तोरा । दर्शन दीजे बन्दीछोरा ॥
तव महिमा का अन्त न पाऊँ । केहि विधि गुण प्रभु तुम्हरे गाऊँ ॥
अन्तरदृष्टि देहुप्रभु मोही । जाते मैं लखि पाऊँ तोही ॥
सकल प्रकाशी रूप जो तोरा । सो प्रभु आय बसै उर मोरा ॥
जाते उर अंधियार हो दूरा । ज्ञान भानु का चमके नूरा ॥
पूर्णरूप ते दर्शन पाऊँ । जाते आवागवन नशाऊँ ॥
देह गेह मोहि कछु न सुहावे । बार बार तुम्हरी सुधि आवे ॥
तव दर्शन बिनु तलफल प्राना । मीन नीर ते जिमि बिलगाना ॥
दर्शन दे अपना करि लीजे । जीवन जन्म कृतारथ कीजे ॥

जम जालिम का छूटे देशा । द्वन्द्व सहित सब नशै कलेशा ॥
अन्तर दया तुम्हारी होवे । पाप ताप सबहिन को खोवे ॥
जिमि दर्पण में झलके नूरा । ऐसे दर्शन होय हजूरा ॥
तब मैं जन्म कृतारथ मानूँ । जन्म-मरण की शंक न आनूँ ॥
अविचल पद यह मोक्हँ दीजे । जन अपनो शरणे करि लीजे ॥
नाम एकोत्तर प्रेम ते गावे । हृदय शुद्धि हो पर्शन पावे ॥
प्रतिदिन पाठ करे लवलाई । ताको आवागवन नशाई ॥

साखीः- एकोत्तरशतनाम जो, पढ़ें सुनें मति धीर ।
हंस प्रकाशक रूप तेहि, देवें गुरू कबीर ॥

भजन १

भँवरवा के तोहरा संग जाई ॥ टेक ॥

आवे के बेरिया बड़ा सुख होला, दुअरा पे बाजे बधाई ॥
जावे के बेरिया बड़ा दुःख होला, हँस अकेला जाई ॥ १॥
डेहरी पकड़ि के मेहरी रोवै, बाँह पकड़ि के भाई ।
अँगना के बीचवा पिताजी रोवै, बबुआ के होय गये बिदाई ॥२॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निरवाणी ।
जो ई पद का अर्थ लगावे, जगत पार होय जाई ॥३॥

नाम धुन कीर्तन २

गुरुदेव कहो गुरुदेव कहो, गुरुदेव कहो गुरुदेव कहो ॥१॥
बन्दीछोड़ कहो बन्दीछोड़ कहो,
बन्दीछोड़ कहो बन्दीछोड़ कहो ॥२॥
सत्यनाम कहो सत्यनाम कहो,
सत्यनाम कहो सत्यनाम कहो ॥३॥
मुनीन्द्र कहो श्री मुनीन्द्र कहो,
मुनीद्र कहो श्री मुनीन्द्र कहो ॥ ४॥
करुणामय कहो करुणामय कहो,
करुणामय कहो करुणामय कहो ॥५॥
कबीर कहो श्री कबीर कहो, कबीर कहो श्री कबीर कहो ॥

भजन ३

कबीर गुरु दर्शन दीजिये मोहि ॥ टेक ॥

तुम्हरे दरश से पाप कटत है निर्मल होत शरीर ॥१॥
हिन्दू के तुम गुरु कहाये, मुसलमान के पीर ॥२॥
जगन्नाथ के मंदिर थाप्यो, हट गयो सागर नीर ॥३॥
धर्मदास के सतगुरु साहेब, कर ले मनवा को थीर ॥४॥

भजन ४

आओ गुरुदेव दर्शन दीजो,
तुमही हो जगत के दाता -२ ॥टेक॥

तुमही हो सत्यम् तुमही हो नित्यम्, तुमही हो ब्रह्म स्वरूपा-२॥१॥
सृष्टि स्थिति लय कारण तुमही हो, तुमही हो अनादि रूपा-२॥२॥
अनाथ नाथ दीन बन्धु, तुमही हो आनँद रूपा -२ ॥३॥
अज्ञान नाशक शरण संरक्षक, आत्मज्ञान प्रदाता -२ ॥४॥
दीन दयालु कबीर गुरु, दीजिये भक्ति प्रकाश -२ ॥५॥

भजन ५

कैसे आऊँ मेरे साहेब-२तेरी काशी नगरी, बड़ी दूर नगरी ॥टेक॥

धीरे धीरे आऊँ तो सांस मेरा धड़के, हाँ सांस मेरा धड़के-२।
जल्दी जल्दी आऊँ तो, छलके गगरी, बड़ी दूर नगरी-२ ॥१॥
रात में आऊँ तो साहेब, जिया मेरा धड़के,
हाँ जिया मेरा धड़के-२।
दिन में आऊँ तो साहेब देखे नगरी, बड़ी दूर नगरी -२ ॥२॥
इस पार गंगा और उस पार यमुना हाँ उस पार यमुना -२।
बीच में साहेब तेरी काशी नगरी, बड़ी दूर नगरी -२ ॥३॥
धर्मदास कहे तिहरे मिलन में, हाँ तिहरे मिलन में -२।
तड़पत रहे दिन रात दिलरी, बड़ी दूर नगरी -२ ॥४॥

भजन ६

मेरो सच्चा है वैराग, मैं तो गुरु शरण में आया ॥टेक॥

कौन करन को धरती आई, कौन करन को गंगा ।
कौन करन तिरवेणी आई,
कौन करन को भंगा, मेरो सच्चा .....॥१॥
क्षमा करन को धरती आई, भवतारण को गंगा ।
मुक्ति हेतु तिरवेणी आई,
कर ले मन को चंगा, मेरो सच्चा.....॥२॥
किसने दीन्हे दण्ड-कमण्डल, किसने दीन्हे झोली ।
किसने दीन्हे ज्ञान की पुडिया,
कौन गुरु का चेला, मेरो सच्चा....॥३॥
ब्रम्हा दीन्हे दण्ड-कमण्डल, विष्णु दीन्हे झोली ।
सतगुरु दीन्हे ज्ञान की पुड़िया,
वही गुरु मैं चेला, मेरो सच्चा.....॥४॥

भजन ७

सत्यनाम सत्यनाम सत्यनाम बोल,
जय करुणामय सत्यनाम बोल ॥टेक॥

गर्भवास में भक्ति कबूले, बाहर आकर उसको भूले ।
पूरा करो तुम अपना कौल, जय करुणामय सत्यनाम बोल॥ १॥
मानुष तन तुम पाय के प्यारे, सोते हो क्यों पाँव पसारे ।
ज्ञान हीन नर आँखें खोल, जय करुणामय सत्यनाम बोल॥२॥
जिसने आकर जनम लिया है, उसने एक दिन कूँच किया है ।
अब तो अन्तर के पट खोल, जय करुणामय सत्यनाम बोल॥३॥
लोभ घमण्ड सभी बिसराओ, विषयों से तुम चित्त हटाओ ।
ज्ञान तराजू लेकर तौल, जय करुणामय सत्यनाम बोल ॥४॥
घट घट में वह रमे निरन्तर, तुम मत जानो उसमें अन्तर ।
पुरुष वचन है अमी अमोल, जय करुणामय सत्यनाम बोल ॥५॥
सत्यलोक की ऐसी बाता, कोटि शशी एक रोम लजाता ।
तहाँ पर हँसा करत किलोल, जय करुणामय सत्यनाम बोल॥६॥

भजन ८

महिमा तेरी अपार साहेब, कह गये सन्त गरीब ॥टेक॥

पानी से पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर ।
अन्न अहार करता नहीं, ताका नाम कबीर ॥
हो साहेब, ताका नाम कबीर, महिमा तेरी.....॥१॥
कमल पुष्प पर प्रगट भये, लहर तालाब महान ।
काशी पुरी आनन्द भये, साधू सन्त महान ॥
हो साहेब, साधू सन्त महान, महिमा तेरी.....॥२॥
सतगुरु प्रगट भये हैं, लीला किया अपार ।
साहेब रामानन्द जी, गुरु भये करतार ॥
हो साहेब, गुरु भये करतार, महिमा तेरी.....॥३॥
चलती चक्की देखि के, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ॥
हो साहेब, साबुत बचा न कोय, महिमा तेरी...॥४॥
जाको राखे साँईयाँ, मारि सके ना कोय ।
बाल न बाँका करि सके, जो जग बैरी होय ॥

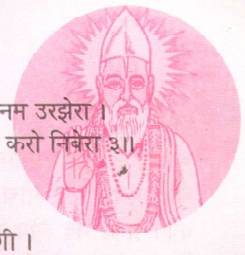

हो साहेब, जो जग बैरी होय, महिमा तेरी....॥५॥
कबीर खडे बाजार में, सब की माँगे खैर ।
ना काह से दोस्ती, ना काह से बैर ॥
हो साहेब, ना काह से बैर , महिमा तेरी.....॥६॥
कहैं गरीब सुनो हो सन्तो !, ये पद हैं निरवाण ।
साहेब भीतर और बाहर, तन मन अरपो प्राण ॥
हो साहेब, तन मन अरपो प्राण, महिमा तेरी....॥७॥

सोहर ९

चाँदनी रात उजियरिया, भईल अँधियरिया हो ।
साधो पापी रे पपीहा,
आधीरात को शब्द सुनावै हो-२ ॥टेक॥
पपीहा शब्द मोहे लागल, मन बैरागल हो ।
साधो खोजत फिरौं प्रभु, आपन तो दूसरा न जानै हो-२॥१॥
एक बन गइले, दूसर बन गइले, तीसर बन हो ।
साधो ऊभि ऊभि आवल शरीर, नयन भर जागर हो -२ ॥२॥
भवजल नदिया भयावन, नहिं कोई आपन हो ।
साधो नहीं रे खेवट पतवार, कवन विधि उतरौं हो-२ ॥३॥
साहेब कबीर सोहर गावैं, मन बौरावत हो ।
साधो अजर-अमर घर जाव, परम पद पावल हो-२ ॥४॥

भजन १०

कृपा करने को भक्तों परा,प्रभु सतलोक से आये ।
कमल दल पर प्रगट काशी में,
हो कबीर कहवायेा॥टेक॥
बना के वेष साधू का, लगे फिरने घरो घर में ।
कहें हमसे करो चरचा, ये सुन विद्वान घबराये ॥१॥
चली नहीं और कुछ युक्ति, तो पण्डित सब लगे कहने ।
बताओ ये हमें पहले कि, दीक्षा किससे तुम लाये ॥२॥
न हरगिज ज्ञान दुनियाँ में, कभी परमान होता है ।
बिना कोई गुरु के पास, जाकर कान फुँकवाये ॥३॥
ये सुन कौतुक किया ऐसा, धन्य ओ लघु रूप बालक का ।
जाय गंगा किनारे घाट, पर सोये थे सिर नाये ॥४॥
नहाने के समय जाने में, रामानन्द स्वामी की ।
खडाऊँ आ लगी सिर में, तो दैय्या कह के चिल्लाये ॥५॥
दयालु सन्त थे स्वामी, उठाकर गोद में बोले ।
भजो "श्रीराम"मत रोवो, मिटे दुःख हरि का गुण गाये ॥६॥
करी ऐसी कई लीला, कहाँ तक कह सके कोई ।
मुक्ति धर्मदास है जग में, उन्हीं के शरण में जाये ॥७॥

भजन ११

तोर गठरी में लागा चोर, बटोही का सोये ॥टेक॥
पाँच पचीस तीन है चोरवा, ये सब कीन्हा शोर ॥१॥
जाग सबेरा बाट अनेरा, फिर नहिं लागे जोर ॥२॥
भव सागर एक नदी बहत है, बिन उतरे जावे भोर ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! जागत कीजै भोर ॥४॥

भजन १२

भूला लोग कहैं घर मेरा ॥
जा घर में तू भूला डोले, सो घर नाहीं तेरा ॥टेक॥
हाथी घोडा बैल वाहना, संग्रह कियो घनेरा ।
बस्ती महँ से दियो खदेरा, जंगल कियो बसेरा ॥१॥
गाँठि बाँधि खरच नहिं पठयो, बहुरि न कियो फेरा ।
बीबी बाहर हरम महल में, बीच मियाँ का डेरा ॥२॥
नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझे, जनम जनम उरझेरा ।
कहँहि कबीर सुनो हो सन्तो ! ई पद का करो निबेरा ३॥

भजन १३

साधो ये मुरदों का गाँव ॥टेक॥
पीर मरे पैगम्बर मरिगे, मरिगे जिन्दा जोगी ।
राजा मरिगे परजा मरिगे, मरिगे वैद और रोगी ॥१॥
चन्दो मरिहैं सूरजो मरिहैं, मरिहैं धरणि अकाशा ।
चौदह भुवन के चौधरि मरिहैं, औरन की क्या आशा ॥२॥
नव भी मरिगे दशहुँ मरिगे, मरिगे सहस अठासी ।
तैंतिस कोटि देवता मरिगे, परी काल की फाँसी ॥३॥
नाम अनाम रहत है नितही, दूजा तत्त्व न होई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! भटकि मरो मति कोई ॥४॥

भजन १४

कोई धीमी गाड़ी हाँको रे, राम गाड़ी वाला ॥
कोई मधुरी गाड़ी हाँको रे, राम गाड़ी वाला ॥टेक॥
गाड़ी तेरी रंग विरंगी, बैल तो हैं दो चार ।
हाँकने वाला छैल छबीला, बैठन वाला लाल ॥१॥
गाड़ी अटकी रेत में भाई, मंजिल बडी है दूर ।
ऐसा कोई सतगुरु मिले जो, पहुँचावे हजूर ॥२॥
घोड़ा छूटा तन से भाई, जग में पड़ी पुकार ।
दस दरवजे बन्द हुये भाई, निकल चला असवार ॥२॥
यन्त्र हमारो झाँझर भाई, गया बजावन हार ।
यन्त्र बजाओ शोन करी रे, टूट गया सब तार ॥३॥
गंगा काठे घर बनाया, नाव में निर्मल नीर ।
कहने वाले कह गये भाई, साधु गुरु कबीर ॥४॥

भजन १५

साधु आये पाहुना हो, धन्य जाके भाग जागे ॥टेक॥
बन्दगी करौं प्रणामा, तन मन वारों प्राणा ।
सतगुरु लागे ताना, शब्द सुहावना हो ॥१॥
अंग अंग फूल भई, दिहलु की दुरमति गई ।
प्रेम के फुहारा छूटे, भवन सुहावना हो ॥२॥
आत्मा भई प्रकाशा, कोटि भानु की प्रकाशा ।
कहँहिं कबीर साहेब, आनन्द बखावना हो ॥३॥

भजन १६

मोहे लागी लगन गुरु चरणन की,
गुरु चरणन की ॥टेक॥
चरण बिना मोहे कछु नहिं भावे, जग माया सब सपनन की॥१॥
भव सागर सब सूख गये हैं, फिकर नहीं मोहे तरनन की ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आश गही गुरुशरणन की ॥३॥

भजन १७

चार दिन की जिन्दगी, चला चली के खेल बा,
झमेला कौने काम के जाय के अकेल बा ॥टेक॥
कञ्चन महल दहल जाय पगला,
पिंजडे से पंछी निकल जाय पगला ।
हम हम कहले विचार तोर फेल बा, झमेला.....॥१॥
संग नहीं जाय प्यारे साथ की नवेलियाँ,
संग नहीं जाय प्यारे रुपया के गठरिया।
छूट जाई गड़िया तूफान मेल रेल बा, झमेला .....॥२॥
बावला बावला भइले धन के कमैया,
संग तोर जाये प्यारे कर्म के गठरिया ।
जरी कैसे दियना न दियना में तेल बा, झमेला .....॥३॥

शब्द १८

चलना है दूर मुसाफिर, काहे सोवे रे ।।टेक।।

चेत अचेत नर सोच बावरे, बहुत नींद मत सोवे रे ।
काम क्रोध मद लोभ मे फंसकर, उमरिया काहे खोवे रे ॥१॥
सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवे रे ।
सो गठरी तोर बीच मे छिन गई, मूँड पकड़ि कहा रोवे रे ॥२॥
रस्ता तो दूर कठिन है, चलब अकेला होवे रे ।
संग साथ तेरे कोई न चलेगा, का के डगरिया जोवे रे ॥३॥
नदिया गहरी नाव पुरानी, केहि विधि पार तू होवै रे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ब्याज धो के मूल मत खोवै रे ॥४॥

साखी

तन को जोगी सब करैं, मन को करैं न कोय ।
सहजे सब सिधि पाइये, जो मन जोगी होय ॥१॥
हम तो जोगी मनहि के, तन के हैं ते और ।
मन को जोग लगावता, दशा भई कछु और ॥२॥

भजन १९

मन ना रंगाये जोगी कपड़ा रंगाये ।
मन ना फिराये जोगी मनका फिराये ।।टेक।।

आसन मारि गुफा में बैठे, मनुवा चहुँ दिशि धाये ।
भवतारक घट बीच बिराजे, खोजन तीरथ जाये ॥१॥
पोथी बाँचे याग करावे, भगती कहुँ नहिं पाये ।
मन का मनका फेरे नाहीं, तुलसी माला फिराये ॥२॥
जोगी होके जागा नाहीं, चौरासी भरमाये ।
जोग जुगत सों दास कबीरा, अलख निरञ्जन पाये ॥३॥

साखी

दर दीवार दर्पण भयो, जित देखूँ तित तोय ।
कंकर पत्थर ठीकरी, सब आरसी मोय ॥

भजन २०

आवे न जावे मरे नहिं जनमे, सोइ निज पीव हमारा हो ।
ना प्रथम जन्नी ने जनमो, ना कोई सिरजन हारा हो ।।टेक।।

साधु न सिद्ध मुनी ना तपसी, ना कोइ करत आचारा हो ।
ना षट्दरशन चार वरण में, ना आश्रम व्यवहारा हो ॥१॥
ना त्रिदेवा सोहं शक्ति, निराकार से न्यारा हो ।
शब्द अतीत अटल अविनाशी, क्षर अक्षर से न्यारा हो ॥२॥
जोति सरूप निरञ्जन नाहीं, ना ओम हुँकारा हो ।
धरणी ना पवन गगन ना पानी, ना रवि चन्दा तारा हो ॥३॥
है परगट पर दीषत नाहीं, सतगुरू सैन सहारा हो ।
कहैं कबीर सर्व ही साहेब, परखो परखन हारा हो ॥४॥

भजन २१

हमारे गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी, पाई अमर निशानी ।।टेक।।

काग पलट गुरु हंसा कीन्हे, दीन्ही नाम निशानी ।
हंसा पहुँचे सुखसागर पर, मुक्ति भरै जहाँ पानी ॥१॥
जल बीच कुम्भ कुम्भ बीच जल है, बाहर भीतर पानी।
विकस्यो कुम्भ जल जलहि समाना, ये गति विरले ने जानी ॥२॥
है अथाह थाह सन्तन में, दरिया लहर समानी ।
धीमर जाल डाल का करिहैं जब मीन पिघल भये पानी ॥३॥
अनुभव का ज्ञान उजलता की वाणी,
सो है अकथ कहानी ।
कहैं कबीर गूँगे की सैन, जिन जानी उन मानी ॥४॥

भजन २२

साईं की नगरिया जाना है रे बन्दे, जाना है रे बन्दे ।
जग नाहीं अपना बेगाना है रे बन्दे,
जाना है रे बन्दे ।।टेक।।

पत्ता टूटा डाल से, ले गई पवन उड़ाय ।
अब के बिछुड़े ना मिले, दूर पड़ेंगे जाय ॥
माली आवत देखि के, कलियन करीं पुकार ।
फूले-फूले चुन लिये, काल्ह हमारी बार॥ साईं की ॥१॥
चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय ।
दुई पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ॥
लूट सके तो लूट ले, सत्यनाम की लूट ।
पाछे फिर पछ्ताहुगे, प्राण जाहि जब छूटा॥ साईं की ॥२॥
माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रूँदे मोहे ।
एक दिन ऐसा होवेगा, मैं रूदूँगी तोहे ॥
लकड़ी कहे लोहार से, तू मत जारै मोहि ।
एक दिन ऐसा होवेगा, मैं जारूँगी तोहि॥ साईं की ॥३॥
बन्दे तू कर बन्दगी, तो पावे दीदार ।
अवसर मानुष जन्मका, बहुरि न बारम्बार ॥
कबीरा सोया क्या करे, जाग न जपे मुरारि ।
एक दिना है सोवना, लम्बे पाँव पसारि॥ साईं की ॥४॥

भजन २३

मन लागो मेरो यार फकीरी में ।।टेक॥

जो सुख पावो राम भजन में , वे सुख नाहिं अमीरी में ।
भला बुरा सब का सुनि लीजे , कर गुजरान गरीबी में ॥१॥
प्रेम नगर में रहनी हमारी ,भलि बनि जाय सबूरी में ।
हाथ में तूँबी बगल में सोटा , चारों दिशा जगीरी में ॥२॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा , कहाँ फिरत मगरूरी में ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! साहेब मिलैं सबूरी में ॥३॥

शब्द २४

मेरी सुरति सोहागन जाग री ।।टेक॥

क्या तू सोवे मोह नींद में, उठ भजन बिच लाग री ॥१॥
अनहद शब्द सुनो चित देके, उठत मधुर धुन राग री ॥२॥
चरण शीश धरि विनती करियो,
पावेगी अटल सोहाग री ॥३॥
कहत कबीरा सुनो भाई साधो, जगत पीठ दे भाग री ॥४॥

भजन २५

अरे दिल गाफिल गफलत मतकर,
एक दिन यम तेरे आवेगा ।।टेक॥

सौदा करन को या जग आया, पूँजी लाया मूल गँवाया ।
प्रेम नगर का अन्त न पाया, ज्यों आया त्यों जावेगा ॥१॥
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता,
या जीवन में क्या क्या कीता ।
सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावेगा ॥२॥

परले पार मेरा मीता खड़िया,
उस मिलने का ध्यान न धरिया ।
टूटी नाव ऊपर जा बैठा, गाफिल गोता खायेगा ॥३॥
साहेब कबीर कहैं समुझाई, अन्तकाल तेरा कौन सहाई ।
चला अकेला संग न कोई, किया आपना पावेगा ॥४॥

शब्द २६

घूँघट के पट खोला सखी री, मिलि हैं साईं दीदारा ।टेक।।
मोह माया की ओढ़नी ओढ़े, दीखे नाहिं द्वारा ।
शून्य महल में घोर अँधेरा, करो नाम उजियारा ॥१॥
गगन मण्डल से अमृत बरसे, होत आनन्द अपारा ।
अनहद की धुन बजे निरन्तर, सोहं का झँकारा ॥२॥
सतगुरु साहेब की बलिहारी, बाण शब्द का मारा ।
कहैं कबीरा आपा खोज्या, पाया प्राण आधारा ॥३॥

भजन २७

राम रहीमा एकै है रे, काहे करो लड़ाई।
वह निर्गुणिया अगम अपारा, तीनों लोक सहाई ।टेक।।
वेद पढ़न्ते पण्डित हो गये, सत्तनाम नहीं जाना ।
कहैं कबीरा ध्यान भजन से, पाया पद निर्वाणा ॥१॥
एक ही माटी की सब काया, ऊँच नीच कोऊ नाहीं ।
एक ही ज्योति बरै कबीरा, सब घट अन्तर माहीं ॥२॥
यह अनमोलक जीवन पाके, सद्गुरु शब्दी ध्याओ ।
कहैं कबीरा खलक में सारी, एक अलख दरशाओ ॥३॥

भजन २८

सत्तनाम का सुमिरण कर ले, कल जाने क्या होय।
जाग-जाग नर निज आतम में, काहे बिरथा सोय ।टेक।।
जेही कारण तू जग में आया, वो नहीं तूने कर्म कमाया ।
मन मैला का मैला तेरा, काया मल मल धोय ॥१॥
दो दिन का है रैन बसेरा, कौन है मेरा कौन है तेरा ।
हुआ सबेरा चले मुसाफिर, अब क्या नैन भिगोय ॥२॥
गुरु का शब्द जगा ले मन में, चौरासी से घूटे क्षण में ।
ये तन बार-बार नहीं पावे, शुभ अवसर क्यों खोय ॥३॥
ये दुनियाँ है एक तमासा, कर नहीं बन्दे इसकी आशा ।
कह कबीर सुनो भाई साधो, साईं भजे सुख होय ॥४॥

साखी

साईं से सब होत है, बन्दे से कछु नाहिं ।
राई से पर्वत करे, पर्वत राई माहिं ॥

भजन २९

जनम तेरा बातों ही बीत गयो,
तूने कबहुँ न राम कह्यो ।टेक।।
पाँच बरस का भोला रे भाला, अब तो बीस भयो ।
मगर पचीसी माया कारण, देश विदेश गयो ॥१॥
तीस बरस जब मति ऊपजी, नित नित लोभ नयो ।
मायाजोड़ी लाख करोड़ी, अजहुँ न तृप्त भयो ॥२॥
वृद्ध भयो तब आलस ऊपजी, कफ नित कण्ठ रह्यो।
संगति कबहुँ नाहीं कीन्हीं, बिरथा जनम गयो ॥३॥
ये संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रच्यो ।
कहत कबीर समुझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥४॥

साखी

नींद निसानी मौत की, उठ कबीरा जाग ।
और रसायन छाँड़ि के, नाम रसायन लाग ॥

भजन ३०

नींद से अब जाग बन्दे, राम में अब मन रमा ।
निर्गुणा से लाग बन्दे, है वही परमातमा ।टेक।।
हो गई है भोर कब से, ज्ञान का सूरज उगा ।
जा रही हर श्वास बिरथा, साईं सुमिरण में लगा ॥१॥
फिर न पायेगा तू अवसर, कर ले अपना तू भला ।
स्वप्न के बँधन हैं झूठे, मोह से मन को छुड़ा ॥२॥
धार ले सतनाम साखी, बन्दगी करले जरा ।
नैन जो उलटे कबीरा, साईं तो सन्मुख खड़ा ॥३॥

साखी ३१

कबीरा सोया क्या करे, बैठा रहो और जाग ।
जिनके सग ते बिछड़ो, वाही के संग लाग ॥१॥
ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा साईं तुज्झ में, जाग सके तो जाग ॥२॥
माला फेरत जुग भया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका छांड़ि दे, मन का मनका फेर ॥३॥
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं ।
मनुवा तो चहुँदिश फिरे, ये तो सुमिरण नाहिं ॥४॥
राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय ।
जो सुख साधु संग में, सो बैकुण्ठ न होय ॥५॥
पारस में अरू संत में, बड़ो अन्तरो जान ।
वो लोहा कञ्चन करे, ये कर दे आप समान ॥६॥
सुमिरण सुरत लगाय के, मुख से कछु ना बोल ।
बाहर के पट बन्द कर, अन्दर के पट खोल ॥७॥
श्वास श्वास में नाम ले, वृथा श्वास ना खोय ।
ना जाने येहि श्वासका, आवा न होय न होय ॥८॥
जागो लोगों मत सोवो, ना करो नींद से प्यार ।
जैसे सपना रैन का, ऐसा ये संसार ॥९॥
कहैं कबीर पुकार के, दो बातें लिख दे ।
कर साहेब को बन्दगी, भूखों को कछु दे ॥१०॥
कबीरा वा दिन याद कर, पग ऊपर तर शीश ।
मिरत लोक में आय के बिसर गया जगदीश ॥११॥
चेत सबेरे बावरे, फिर पाछे पछताय ।
तुझको जाना दूर है, कहैं कबीर जगाय ॥१२॥
साईं इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥१३॥
कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर ।
ना काहू से दोसती, ना काहू से बैर ॥१४॥
कथा कीरतन कलि बिखै, भवसागर की नाव ।
कहैं कबीर भव तरण को, नाहीं और उपाय ॥१५॥
कहना था सो कह दिया, अब कछु कहा न जाय।
एक रहा दूजा गया, दरिया लहर समाय ॥१६॥

साखी

कबीरा जब हम पैदा हुये, जग हँसे हम रोये ।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसें जग रोवे ॥

भजन ३२

चदरिया झीनी-झीनी के रामनाम रस भीनी ।।टेक।।

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी ।
नव दस मास बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी ।।१।।
जब मोरी चादर बन घर आई, रंगरेज को दीनी ।
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने, के लालों लाल कर दीनी ।।२।।
चादर ओढ़ि शंका मत करियो, ये दो दिन तुमको दीनी।
मूरख लोग भेद नहिं जाने, दिन दिन मैली कीनी ।।३।।
ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी, शुकदेव ने निरमल कीनी ।
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी ।।४।।

भजन ३३

मत कर मोह तू, हरि भजन को मान रे तू ।।टेक।।

नयन दिये दरशन करने को, श्रवण दिये सुन ज्ञान रे ।।१।।
बदन दिये हरि गुण गाने को, हाथ दिये कर दान रे ।।२।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
कञ्चन निपजत खान रे ।।३।।

भजन ३४

आप सुभाव मेरे, अवधू ! सदा मगन में रहना।
जगत जीव है करमा धीना,
अचरज कछु ना लीना ।।टेक।।

तुम नहीं तेरा कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ।
तेरा है सो तेरे पासे, अवर सबै है अनेरा ।।१।।
बपु विनाशी तू अविनाशी, अब है किन्तु बिलासी ।
बपु संग जब दूर निकासी,
तब तुम शिव का वासी ।।२।।
राग निरीता दोय खबीता, ये तुम दुःख का कीता ।
जब तुम उनको दूर करीता, तब तुम जग का ईशा ।।३।।
पर की आशा सदा निराशा, ये है जग जन पासा ।
ते काटन को करो अभ्यासा, तहो सदा सुखवासा ।।४।।

शब्द-निर्गुण ३५

रहना नहीं देश बिराना है ।।टेक।।

ये संसार कागज की पुड़िया, बुन्द पड़े घुल जाना है ।।१।।
ये ससार कांटे की बाड़ी,
उलझि पुलझि मरि जाना है ।।२।।
ये संसार झाड़ और झाँखड़,
आगि लगे बरि जाना है ।।३।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
सतगुरु नाम ठिकाना है ।।४।।

साखी ३६

कबीर कहता जात हूँ, सुनता है सब कोई ।
राम कहे भला होयेगा, नहिं तर भला न होई ।।१।।
कबीर कहे मैं कथि गया, कथि गया ब्रह्म-महेश ।
रामनाम ततसार है, सब काहू उपदेश ।।२।।
भगति भजन हरि नाव है, दूजा दुःख अपार ।
मनसा वाचा कर्मणा, कबीर सुमिरण सार ।।३।।
मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहि आहि ।
मेरा मन रामहि ह्वै रहा, शीश नमावूँ काहि ।।४।।

तू तू करता तू भया, तुझमें रही न हूँ ।
बारी तेरी बलि गई, जित देखूँ तित तूँ ।।५।।
कबीर निर्भय राम जपि, जब लग दीवे बाति ।
तेल घट्या बाती बुझी, सोवेगा दिन राति ।।६।।
कबीर सूता क्या करे, जाग न जपे मुरारि ।
एक दिन भी सोवना, लम्बे पाँव पसारि ।।७।।
कबीर सूता क्या करे, काहे न देखे जागि ।
जाका संग ते बीछुड़्या, ताही के संग लागि ।।८।।
राम पियारा छाँड़ि करि, करे आन का जाप ।
वेश्या केरा पूत ज्यूँ, कहै कौन सूँ बाप ।।९।।
लूटि सको तो लूटियो, रामनाम भण्डार ।
काल कण्ठ ते गहेगा, रूँधे दशों दुवार ।।१०।।
लम्बा मारग दूर घर, विकट पंथ बहुमार ।
कहो सन्तो! क्यों पाइये, दुर्लभ हरि दीदार ।।११।।

शब्द ३७

मन रे ! कागद कीर पराया।
कहाँ भयो व्योपार तुम्हारे, कलकर बढ़े सवाया ।।टेक।।

बड़े बोहरे साठों दीन्हों, कल कर काढ़ो खोटे ।
चार लाश अरु असी फीक दे,
जनम लिसो सब छोटे ।।१।।
अब की बेर न कागद कीरयो, ता धरम रा ई सौं टूटे ।
पूँजी पितड़ी बन्दी लै कहि, तब कहे कौन ते छूटे ।।२।।
गुरुदेव ज्ञानी भयो लगनिया, सुमिरण दीन्हों हीरा ।
बड़ी निसरनी नाव राम की, चढ़ि गयो पीर कबीरा ।।३।।

भजन ३८

बन्दे सतगुरु सतगुरु बोल,
तेरा क्या लगे है मोल ।।टेक।।
दश बीस कोस नहीं चलना ,तेरे सिर पे भार नहीं धरना ।
तेरे हाथ पैर नहीं हिलना,जरा इस दिल की घुण्डी खोल ।।१।।
ये मन बौरंगी घोड़ा , घोड़े संग पाँच बछेड़ा ।
ये पाँचों फिरै लुटेरा , भाई रे तू इनकी बात मरोड़ ।। २।।
ये माया है जग ठगनी , तेरी बड़ो बड़ो संग लगनी ।
माया ने जग भरमाया , भाई रे तू इसका गैला छोड़ ।।३।।
तोहे साहेब कबीर समुझावें , भूले को राह बतावें ।
गया वक्त हाथ नहीं आवे , भाई रे मत चौरासी में डोल ।।४।।

भजन ३९

गुरु (साईं) के नाम बिन नाहीं निस्तारा,
जाग-जाग नर क्या सूता।
जागत नगरी में चोर न लागे,
झख मारेगा यमदूता जी ।।टेक।।

जप कर तप कर करोड़ यतन कर,
काशी में जाय करवत लिया ।
बिना मरे तेरी मुक्ति न होवे, मर जा योगी अवधूता ।।१।।
योगी हो शिर जरा बढ़ाली, अंग रमा लई भैभूता ।
दमड़ी के कारण काया फूँक लई,
योग नहीं ये तो हद झूठा ।।२।।
जिनकी सूरता लगी भजन में, काल जाल ये वे ना डरता ।
अदर-अड़ी पे आसन राखे, सो योगी जन अवधूता ।।३।।

सोवत रहा नर गया चौरासी, जागा है जिन जुग जीता ।
रामानन्द का कहैं कबीरा, मँजले मँजले जा पहुँचा ॥४॥

शब्द ४०

दो दिन का मेहमान, मन तू नेकी कर ले ।टेक॥

जोरू लड़का कुटुम्ब कबीला, दा दिन का तन मन का मेला जी ।
अन्तकाल उठ चले अकेला, तज माया मण्डान ॥१॥
कहाँ ते आया कहाँ जायेगा, तन छूटे मन कहाँ समायेगा जी ।
आखिर तुझको कौन कहेगा, गुरु बिन आतम ज्ञान ॥२॥
कौन है तेरा सच्चा साई, झूठी है ये जग अपनाई जी ।
कौन ठिकाना तेरा भाई, कहाँ बस्ती कहाँ नाम ॥३॥
रहट माल ये कूप जल भरता, कभी भरे कभी रीता फिरता जी ।
अनेक बार तू जन्मे मरता, क्यों करता अभिमान ॥४॥
लाख चौरासी भूख ते प्यासा, ऊँच नीच घर करता भरता जी ।
कहैं कबीर जब छूटे साँसा, ले ले गुरु का नाम ॥५॥

होली ४१

होली खेलत सन्त सुजान, आतम राम से ।
छिन-छिन पल-पल होली खेलो,
निशदिन आठो याम ।टेक॥

पण्डित खेले पोथी पथरा से, काजी किताब कुरान से ।
पतिव्रता खेले अपने पिया से, गणिका सकल जहान से ॥१॥
योगी खेले योग-युक्ति से, अभिमानी अभिमान से ।
कामी खेले कामिनी के संग, लोभी खेले दाम से ॥२॥
अति प्रचण्ड तेज माया बल, सब जग मारा बान से ।
कोटिन माहिं बचे कोई बिरला, कहैं कबीर गुरुज्ञान से ॥३॥

होली ४२

अरी! होनी होली सो होली, चेत अजहुँ मति भोली ।टेक॥

जुगन जुगन से पाँव पसारे, खूब पेट भर सो ली ।
आगम निगम जगावत हारे, कटुक मधुर बहु बोली ।
आँख तबहुँ नहीं खोली, होनी होली सो होली॥१॥
यह मानुष तन पायके, आयु क्यों खोवत इत उत डोली।
अन्त समय यमदूत आयकै, करिहैं पकरि ठठोली ।
देखि जिय जैहैं कलोली, होनी होली सो होली ॥२॥
विनय अबीर स्वधर्म अगरजा, भरि गुलाल की झोली ।
खेलन फाग चलो निज प्रभु से, समता केशर घोली ।
शीश उनहीं के दोली, होनी होली सो होली। ॥३॥
जग प्रचण्ड नश्वर मायाकृत, कल्पित कलित कपोली ।
मान सरोवर में नाना विधि, उठत तरङ्ग झकोली ।
देखु उर माहिं टटोली, होनी होली सो होली ॥४॥
कहैं कबीर सुहागिन सुन ले, करु निज वृत्ति अहोली ।
सुरति शब्द की धार पकरि चढ़ु, गगन गुफा जहाँ पोली ।
वस्तु मिली है अनमोली, होनी होली सो होली ॥५॥

निर्गुण ४३

तज दिये प्राण रे काया कैसी रोई, तज दिये प्राण ।टेक॥

चलत प्राण काया कैसी रोई, छोड़ चला निर्मोही ।
मैं जाना मेरे संग चलेगी, याही ते काया मल मल धोई ॥१॥
ऊँचे नीचे मंदिर छोड़े, गाय भैंस घर भोड़ी ।
तिरिया जो कुलवन्ती छोड़ी, और पुतरन की जोड़ी ॥२॥
मोटी झोटी गजी मँगाई चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चार जने ये तो लैके चाले, फूँक गई रे जैसे फागुन की होली ॥३॥
भोरी तिरिया रोवन लागी, बिछुड़ गई रे मेरी जोड़ी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी ॥४॥

निर्गुण ४४

हमका ओढ़ावे चादरिया चलती बिरिया ।टेक॥

प्राण राम जब निकसन लागे, उलट गई दोऊ नैन पुतरिया ॥१॥
भीतर से जब बाहिर लाये, छूट गई सब महल अटरिया ॥२॥
चार जनैं मिल खाट उठाइन, रोवत लै चले डगर-डगरिया ॥३॥
कहत कबीरा सुनो भाई साधो,
संग जली वो सूखी लकड़िया ॥४॥

होली ४५

आज निज घट बिच फाग मचै हौं ।
तजि मोह मान करुणानिधान के, ध्यान चरण में लगैहौं ।टेक॥

एक स्वर साधि तँबूरा तन को, स्वास के तार मिलैहौं ।
मोद मृदङ्ग मँजीरा मनसा, विनय को बीन बजैहौं ।
भजन सतनाम को गैहौं, आज घर बिच फाग मचैहौं ॥१॥
भक्ति उमङ्ग रङ्ग केशर को, लै प्रभु पै दरकैहौं ।
प्रेम सनेह गुलाल अगरजा, उनहीं के शीश चढ़ैहौं ।
सुरति की मुरति बनैहौं, आज घट बिच फाग मचैहौं ॥२॥
सार विचार श्रृंगार साजि मति, सन्मुख आनि नचैहौं ॥२॥
विविध प्रकार रिझाय नाथ को, फगुवा लैकरि रैहौं ।
अखण्ड सुख पाय अघैहौं,
आज निज घट बिच फाग मचैहौं ॥३॥
कीच उलीज नीच कर्मन को, निगुरन पर बरषैहौं ।
पातिक जारि राख करि कारिख, विमुख के मुख में लगैं हौं ।
तबै धर्म्मदास कहैहौं, आज निज घट बिच फाग मचैहौं ॥४॥

निर्गुण ४६

एक तो मैं भोरी बारी, दूसरे पिया के चोरी-किया हो रामा ।

तीसरे बिरहीनी रसवा के, मतलि हो राम ॥१॥
फूल लोढ़े चचली ये बारी,
सारी मोरी अटकेली डारी-किया हो रामा ।
बिना रे बलमुआ के सारी, कोई ना छोड़ावेला हो रामा ॥२॥
सारी मोरी फाटी गइली, चोलिया मसकी गइली-किया हो रामा।
नयना टपके, नौ रंग भींजल हो राम ॥३॥
भींजत-भींजत ये वारी, चढ़लो मैं गगन अटारी-किया हो रामा ।
जहवाँ जोगिया, धुँइया के रमावलैं हो राम ॥४॥
धुँइया के रमत देखली, योगी के सूतल देखली-किया हो रामा ।
योगी के सूरतिया, हिया बीचे सालेला हो राम ॥५॥
योगी के दुवरवा ये रामा, अनहद बजवा बाजेला हो राम ।
किया हो रामा जहवाँ नाचे, सूरति सोहागीनि हो राम ॥६॥
साहेब कबीर इहै, गावैं निरगुनवा-किया हो रामा ।
मानुष हो जनमवाँ, दुरलभ होलनि ये राम ॥७॥

निर्गुण ४७

पानी भरे जमुना रे गइली,
सूतल पियवा घरवाँ छोड़ली-किया हो रामा ।

कगवा रे कुबोलिया, बोलिया बोलेला हो राम ॥१॥
घड़ीला मैं भरी-भरी, धइलों करवा किया हो रामा ।
लपटी-झपटी के कगवा, हम उड़ाइलैं हो राम ॥२॥
स्वामी के सूतल हम देखली, गोड़ से चदरिया तानी हो राम।
किया हो रामा कवने हो गुनहियाँ, पिया नाहीं बोललैं हो राम ॥३॥
फोड़बा म साकर चूड़िया, धोइबा मैं नयन कजरवा-किया हो रामा।
जाई के अयोधेया, सिंगोर दहवाईब हो राम ॥४॥
साहेब कबीर इहै, गावैं निरगुनवाँ-किया हो रामा ।
मानुष हो जनमवाँ, दुरलभ होलनि ये राम ॥५॥

bhajana 1

bhanvaravā ke toharā sanga jāī | | ṭeka | |

āve ke beriyā baḍā sukha holā,
duarā pe bāje badhāī | |
jāve ke beriyā baḍā duḥkha holā,
hansa akelā jāī | | 1 | |
ḍeharī pakaḍi ke meharī rovai,
banha pakaḍi ke bhāī |
angana ke bīcavā pitājī rovai,
babuā ke hoya gaye bidāī | | 2 | |
kahata kaBira suno bhāī sādho,
ī pada hai niravāṇī |
jo ī pada kā artha lagāve,
jagata pāra hoya jāī | | 3 | |

nāma dhuna kīrtana: 2

gurudeva kaho gurudeva kaho,
gurdeva kaho gurideva kaho | |1 | |
bandīchoḍa kaho bandīchoḍa kaho,
bandīchoḍa kaho bandīchoḍa kaho | | 2| |
satyanāma kaho satyanāme kaho,
satyanāma kaho satyanāma kaho | | 3 | |
munīndra kaho śrī munīndra kaho,
munīndra kaho śrī munīndra kaho | | 4 | |
karuṇamaya kaho karuṇāmaya kaho,
karūṇāmaya kaho karūṇāmaya kaho | | 5 | |
kabīra kaho śrī kabīra kaho,
kabīra kaho śrī kabīra kaho | |

bhajana 3

kabīra guru darśana dījiye mohi | | ṭeka | |

tumhare daraśa se pāpa kaṭata hai,
nirmala hota śarīra | | 1 | |
hindū ke tuma guru kahāye,
musalamāna ke pīra | | 2 | |
jagan nātha ke mandira thāpyo,
haṭa gayo sāgara nīra | | 3 | |
dharmadāsa ke sataguru sāheba,
kara le manavā ko thīra | | 4 | |

bhajana 4

āo gurudeva darśana dījo,
tumahī ho jagata ke dātā - 2 | | ṭeka | |
tumahī ho satyam tumahī ho nityam,
tumahī ho bramha svarupā - 2 | | 1 | |
sṛṣṭi sthiti laya kāraṇa tumahī ho,
tumahī ho anādi rupā - | | 2 | |
anātha nātha dīna bandhu,
tumahī ho ānanda rupā - 2 | | 3 | |
agyāna nāśaka śaraṇa sarakṣaka,
ātmagyāna pradātā - 2 | | 4 | |
dīna dayālu kabīra guru,
dījiye bhakti prakāśa - 2 | | 5 | |

bhajana 5

kaise āun mere sāheba - 2 terī kāśī nagarī,
baḍī dūra nagarī | | ṭeka | |
dhīre dhīre āun to sānsa merā dhaḍake,
hān sānsa merā dhaḍake - 2 |
jaldī jaldī āun, chalake gagarī,
baḍī dūra nagarī - 2 | | 1 | |
rāta men āun to sāheba, jiyā merā dhāḍake,
hān jiyā merā dhaḍake - 2 |
dina men āun to sāheba dekhe nagarī,
baḍī dūra nagarī - 2 | | 2 | |
isa pāra gangā aura usa pāra yamunā,
han ūsa pāra yamunā - 2|
bīca men sāheba terī kāśī nagarī,
baḍī dūra nagarī - 2 | | 3 | |
dharmadāsa kahe tihare milana mein,
hān tihare milana men - 2|
taḍapata rahe dina rāta dilarī,
baḍī dūra nagarī- 2| |4| |

bhajana 6

mero saccā hai vairāga,
main to guru śaraṇa men āyā | | ṭeka | |
kauna karana ko dharatī āī,
kauna karana ko gangā |
kauna karana tiraveṇā āī,
kauna karana ko bhangā, mero saccā ... | | 1 | |
kṣamā karana ko dhartī āī,
bhavatāraṇa ko gangā |
mukti hetu tiraveṇī āī,
kara le mana ko cangā, mero saccā ..... | | 2 | |
kisane dinhe daṇḍa-kamaṇḍala,
kisane dīnhe jholī |
kisane dinhe gyāna ki puḍiyā,
kauna guru kā celā, mero saccā.... | | 3 | |
bramhā dīnhe daṇḍa-kamaṇḍala,
viṣṇu dinhe jholī |
sataguru dīnhe gyāna kī puḍiyā,
vahī guru main celā, mero saccā .. | | 4 | |

bhajana 7

satyanāma satyanāma satyanāma bola,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | ṭeka | |
garbhavāsa men bhakti kabūle,
bāhara ākara usako bhūle |
pūrā kari tuma apanā kaula,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | 1 | |
mānuṣa tana tuma pāya ke pyāre,
sote ho kyon pānva pasāre |
gyāna hīna nara ānkhen khola,
jaya karūnāmaya satyanāma bola | | 2 | |
jisane ākara janama liyā hai,
usane eka dina kūnca kiyā hai |
aba to antara ke paṭa khola,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | 3 | |
lobha ghamaṇḍa sabhī bisarāo,
viṣayon se tuma citta haṭāo |
gyāna tarājū lekara taula,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | 4 | |
ghaṭa ghaṭa men vaha rame nirantara,
tuma mata jāno usamen antara |
purūṣa vacana hai amī amola,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | 5 | |
satyaloka kī aisī bātā, koṭi śaśī eka roma lajāta |
tahān para hansā karata kīlola,
jaya karūṇāmaya satyanāma bola | | 6 | |

bhajan 8

mahimā terī apāra sāheba,
kaha gaye santa garība | | ṭeka | |
pānī se paidā nahīn, śvāsā nahīn śarīra |
anna ahāra karatā nahīn, tākā nāma kabīra | |
ho sāheba, tākā nāma kabīra, mahimā terī.... | | 1 | |
kamala puṣpa para pragaṭa bhaye,
lahara tālāba mahāna |

kāśī purī ānanda bhaye, sādhū santa mahāna | |
ho sāheba, sādhū santa mahāna, mahimā terī... | | 2 | |
sataguru pragaṭa bahye hain, līlā kiyā apāra |
saheba rāmānanda jī, guru bhaye karatāra | |
ho sāheba, guru bhaye karatāra, mahīma terī.... | | 3 | |
calatī cakkī dekha ke, diyā kabīrā roya |
do pāṭana ke bīca mein, sābuta bacā na koya | |
ho sāheba, sābuta bacā na koya, mahimā terī.... | | 4 | |
jāko rākhe sān ī yān, māri sake nā koya |
bāla na bānkā karī sake, jo jaga bairī hoya | |
ho sāheba, jo jaga bairī hoya, mahīmā terī.... | | 5 | |
kabīra khaḍe bājāra mein, saba kī māngе khaira |
nā kāhū se dostī, nā kāhū se baira | |
ho sāheba, nā kāhū se baira, mahimā terī.... | | 6 | |
kahain garība suno ho santo !, ye pada hain niravāṇa |
sāheba bhītara aura bāhara, tana mana arapo prāṇa | |
ho sāheba, tana mana arapo prāṇa, mahimā terī.. | | 7 | |

sohara 9

cāndanī rāta ujiyariyā, bhaīla andhiyariyā ho |
sādho pāpī re papīhā,
adhīrāta ko śabdā sunāvai ho - 2 | | ṭeka | |
papīhā śabda mohe lāgala, mana bairāgala ho |
sādho khojata phiraun prabhu,
āpana to dūsarā na janai ho - 2 | | 1 | |
eka bana gaīle, dūsara bana gaīle, tīsara bana ho |
sādho nahīn re khevaṭa patavāra,
kavana vidhi utaraun ho - 2 | | 3 | |
sāheba kabīra sohara gāvain, mana baurāvata ho |
sādho ajara-amara ghara jāva,
parama pada pāvala ho - 2 | | 4 | |

bhajana 10

kṛpā karane ko bhakton parā, prabhu sataloka se āye |
kamala dala para pragaṭa kāśī men,
ho kabīra kahavāyo | | ṭeka | |
banā ke veṣa sādhū kā,
lage phirane gharo ghara men |
kahen hamase karo caracā,
ye suna vidvāna ghabarāye | | 1 | |
calī nahīn aura kucha yukti,
to paṇḍita saba lage kahane |
batāo ye hamen pahale ki, dīkṣā kisase tuma lāye | | 2 | |
na haragija gyāna duniyān men,
kabhī paramāna hotā hain |
binā koī guru ke pāsa, jākara kāna phunkavāye | | 3 | |
ye suna kautuka kiyā esā,
dhanya o laghu rūpa bālaka kā |
jāya gangā kināre ghāṭa, para soye ṭhe sira nāye | | 4 | |
nahāne ke samaya jāne men, rāmānanda svāmī kī |
khaḍāūn ā lagī sira men, to deiyyā kaha ke cillāye | | 5 | |
dayālu santa the svāmī, uṭhākara goda men bole |
bhajo "śrī rāma" mata rovo,
miṭe duhkha hari kā guṇa gāye | | 6 | |
karī esī kaī līlā, kahān taka kaha sake koī |
mukti dharmadāsa hai jaga men,
unhīn ke śaraṇa men jāye | | 7 | |

bhajana 11

tora gaṭharī men lāgā cora, baṭohī kā soye | | ṭeka | |
pānca pacīsa tīna hai coravā,
ye saba kīnhā śor a | | 1 | |
jāga saberā bāṭa unerā, phira nahin lāge jora | | 2 | |
bhava sāgara eka nadī bahata hai,
bina utare jāve bhora | | 3 | |
kahata kabīra suno bhāī sādho !
jāgata kījai bhora | | 4 | |

bhajana 12

bhūlā loga kahain ghara merā | |
jā ghara men tū bhūlā ḍole,
so ghara nāhīn tora | | ṭeka | |
hāthī ghoḍā baila vāhanā, sangraha kiyo ghanerā |
bastī mahan se diyo khaderā,
jangala kiyo baserā | | 1 | |
gānṭhi bāndhi kharaca nahin paṭhāyo,
bahuri na kiyo pherā |
bībī bāhara harama mahala men,
bīca miyān kā ḍerā | | 2 | |
nau mana sūta arujhi nahin surajhe,
janama janama urajherā |
kahanhi kabīra suno ho santo !
ī pada kā karo niberā | | 3 | |

bhajana 13

sādho ye muradon kā gānva | | ṭeka | |
pīra mare paigambare marigai, murigai jindā jogī |
rājā marigai parajā marigai,
marigai vaida aura rogī | | 1 | |
cando marihain sūrajo marihain,
marihain dhaṇi akāśā |
caudaha bhuvana ke caudhari marihain,
aurana kī kyā āśā | | 2 | |
nava bhī marigai daśahun marigai,
marigai sahasa aṭhāsī |
taintisa koṭi devatā marigai,
parī kāla kī phāsī | | 3 | |
nāma anāma rahata hai nitahī, dūjā tattva na hoyī |
kahain kabīra suno bhāī sādho !
bhaṭaki maro mati koyī | | 4 | |

bhajana 14

koyī dhīmī gāḍī hānko re, rāma gāḍī vālā | |
koyī madhurī gāḍī hānko re,
rāma gāḍī vālā | | ṭeka | |
gāḍī terī ranga virangī, baila to hain do cāra |
hānkane vālā chaila chabīlā,
baiṭhana vālā lāla | | 1 | |
gāḍī aṭakī reta men bhāī, manjila baḍī hai dūra |
eisa koyī sataguru mile jo, pahūncāve hajūra | | 2 | |
ghoḍa chūṭa tana se bhāī, jaga men paḍī pukāra |
dasa daravaje banda huye bhāī,
nikala calā asavāra | | 3 | |
yantra hamāro jhājhara bhāī, gayā bajāvana hāra |
yantra bajāo śona karī re, ṭūṭe gayā saba tāra | | 4 | |
gangā kāṭhe ghara banāyā, nāva men nirmala nīra |
kahane vāle kaha gaye bhāī,
sādhū guru kabīra | | 5 | |

bhajana 15

sādhu āye pāhunā ho,
dhanya jāke bhāga jāge | | ṭeka | |
bandagī karaun praṇāmā, tana mana vāron prāṇā |
sataguru lāge tānā, śabda suhāvanā ho | | 1 | |
anga anga phūla bhaī, dihalu kī duramati gayī |
prema ke phuhārā chūṭe,
bhavana suhāvanā ho | | 2 | |
ātmā bhaī prakāśā, koṭi bhānu kī prakāśā |
kahanhin kabīra sāheba,
ānanda bakhāvanā ho | | 3 | |

bhajana 16

mohe lāgī lagana guru caraṇana kī,
guru caraṇana kī || ṭeka ||
caraṇa binā mohe kachu nahin bhāve,
jaga māyā saba sapanana kī || 1 ||
bhava sāgara saba sukha gaye hain,
phikara nahīn mohe taranana kī || 2 ||
mīrā ke prabhu giradhara nāgara,
āśa gahī guruśaraṇana kī || 3 ||

bhajana 17

cāra dina kī jindagī, calā cal īke khela bā,
jhamelā kauna kāma ke jāya ke akela bā | ṭeka ||
kancana mahala dahala jāya pagalā,
pinjaḍe se panchī nikala jāya pagalā |
hama hama kahale vicāra tora phela bā,
jhamelā ... || 1 ||
sanga nahīn jāya pyāre sātha kī naveliyān,
sanga nahīn jāya pyāre rupayā ke gaṭhariyā |
chūṭa jāyī gāḍiyā tūphāna mela rela bā,
jhamela ... || 2 ||
bāvalā bāvalā bhaile dhana ke kamaiyā,
sanga tore jāye pyāre karma ke gaṭhariyā |
jarī kaise diyanā ne diyana men tela bā,
jhamela .. || 3 ||

bhajana 18

calanā hai dūra musāphira, kāhe sove re || ṭeka ||
ceta acetanara soca bāvera, bahuta nīnda mata sove re |
kāma krodha mada lobha men phansakara,
umariyā kāhe khove re || 1 ||
sira para māyā moha kī gaṭharī, sanga dūta tere hove re |
so gaṭharī tora bīca men china gayī,
mūnda pakaḍi kahā rove re || 2 ||
rastā to dūra kaṭhina hai, calaba akelā hove re |
sanga sātha tere koyī na calegā,
kā ke ḍagariyā jove re || 3 ||
nadiyā gaharī nāva purānī, kehi vidhi pāra tū hovai re |
kahain kabīra suno bhāī sādho,
byāja dho ke mūla mata khovai re || 4 ||

sākhī

tana ko jogī saba karain, mana ko karain na koya |
sahaje saba sidhi pāīye, jo mana jogī hoya || 1 ||
hama to jogī manahi ke, tana ke hain te aura |
mana ko joga lagāvatā, daśā bhaī kachu aura || 2 ||

bhajana 19

mana nā rangāye jogī kapaḍā rangāye |
mana nā phirāye jogī manakā phirāye || ṭeka ||
āsana māri guphā men baiṭhe,
manuvā cahun diśi dhāye |
bhavatāraka ghaṭa bīca birāje,
khojana tīratha jāye || 1 ||
pothī bānce yāga karāve, bhagatī kahun nahin pāye |
mana kā manakā phere nāhin,
tulasī mālā phirāye || 2 ||
jogī hoke jāgā nāhīn, caurāsī bharamāye |
joga jugata son sāheba kabīrā,
alakha niranjana pāye || 3 ||

sākhī

dara dīvāra darpaṇa bhayo, jita dekhūn tita toya |
kankara patthara ṭhīkarī, saba ārasī moya ||

bhajana 20

āven na jāve mare nahin janame,
soī nija pīva hamārā ho |
nā prathama jananī ne janamo,
nā koyī sirajana hārā ho || ṭeka ||
sādhu na sidha munī nā tapasī,
nā koyī karata ācārā ho |
nā ṣaṭdaraśana cāra varaṇa men,
nā āśrama vyavahārā ho || 1 ||
nā tridevā soham śaktī, nirākāra se nyārā ho |
śabda atīta aṭala avināśī,
kṣara akṣara se nyārā ho || 2 ||
joti sarūpa niranjana nāhīn, nā auma hunkārā ho |
dharṇī nā pavana gagana nā pānī,
nā ravi candā tārā ho || 3 ||
hai paragaṭa para dīṣata nāhīṇ,
sataguru saina sahārā ho |
kahain kabīra sarva hī sāheba,
parakho parakhana hārā ho || 4 ||

bhjana 21

hamāre guru mile bramhagyānī,
pāyī amara niśānī || ṭeka ||
kāga palaṭa guru hansā kīnhe, dīnhī nāma niśānī |
hansā pahunce sukhasāgara para,
mukti bharai jahān pānī || 1 ||
jala bīca kumbha kumbha bīca jala hai,
bāhara bhītara pānī |
vikasyo kumbha jala jalahin samānā,
ye gati virale ne jānī || 2 ||
hai athāha thaha satana men, dariyā lahara samānī |
dhīmara jāla ḍāla kā karihain,
jaba mīna pighala bhaye pānī || 3 ||
anubhava kā gyāna ujalatā kī vāṇī,
so hai akatha kahānī |
kahain kabīra gūnge kī saina, jīna jānī una mānī || 4 ||

bhajana 22

sānyī kī nagariyā jānā hai re bande,
jānā hai re bande |
jaga nāhīn apanā begānā hai re bande,
jānā hai re bande || ṭeka ||
pattā ṭūṭā ḍāla se, le gayī pavana uḍāya |
aba ke bichuḍe nā mile, dūra paḍenge jāya ||
mālī āvata dekhi ke, kaliyana karīn pukāra |
phule-phule cuna liye,
kālha hamārī bāra || sānyī kī ...|| 1 ||
calatī cākī dekha ke, diyā kabīrā roya ||
duī pāṭana ke bīca men, sābuta bacā na koya ||
lūṭa sake to lūṭa le, satyanāma kī lūṭa |
pāche phira pachatāhuge,
prāṇa jāhin jaba chūṭa || sānyī kī.. || 2 ||
māṭī kahe kumhāra se, tū kyā rūnde mohe |
eka dina eisā hovegā, main rūndūngī tohe ||
lakaḍī kahe lohāra se, tū mata jārai mohi |
eka dina eisā hovegā,
main jārūngī tohi || sānyī kī... || 3 ||
bande tū kara bandagī, to pāve dīdāra |
avasara mānuṣa janmakā, bahuri na bārambāra ||
kabīrā soyā kyā kare, jaga na jape murāri |
eka dinā hai sāvanā,
lambe pānva pasāri || sānyī kī .. || 4 ||

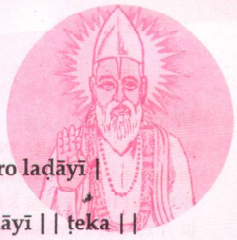

bhajana 23

mana lāgo mero yāra phakīrī men || ṭeka ||
jo sukha pāvo rāma bhajana men,
ve sukha nāhin amīrī men |
bhalā burā saba kā suni līje,
kara gujarāna garībī men || 1 ||
prema nagara men rahanī hamārī,
bhali bani jāya sabūrī men |
hātha men tūnbī bagala men soṭā,
cāron diśā jagīrī men || 2 ||
ākhīra yaha tana khāka milegā,
kahān phirata magarūrī men |
kahata kabīra suno bhāī sādho!
sāheba milain sabūrī men || 3 ||

bhajana 24

merī surati sohāgana jāga rī || ṭeka ||
kyā tū sove moha nīnda men,
uṭha bhajana bica lāga rī || 1 ||
anahada śabda suno cita deke,
uṭhata madhura dhuna rāga rī || 2 ||
caraṇa śīśa dhari vinatī kariyo,
pāvegī aṭala sohāga rī || 3 ||
kahata kabīrā suno bhāī sādho,
jagata pīṭha de bhāga rī || 4 ||

bhajana 25

are dila gāphila gaphalata matakara,
eka dina yama tere āvegā || ṭeka ||
saudā karana ko yā jaga āyā,
pūnjī lāyā mūla ganvāyā |
prema nagara kā anta na pāyā,
jyon āyā tyon jāvegā || 1 ||
suna mere sājana suna mere mītā,
yā jīvana men kyā kyā kītā |
sira pāhana kā bojhā lītā,
āge kauna chuḍāvegā || 2 ||
parale pāra merā mītā khaḍīyā,
usa milane kā dhyāna na dhariyā |
ṭūṭī nāva ūpara jā baiṭhā,
gāphila gotā khāyegā || 3 ||
sāheba kabīra kahain samujhāyī,
antakāla terā kauna sahāyī |
calā akelā sanga na koyī, kiyā āpanā pāvegā || 4 ||

śabda 26

ghūnghaṭa ke paṭa kholā sakhī rī,
mili hain sānyī dīdārā || ṭeka ||
moha māyā kī auḍanī auḍe,
dīkhe nāhin dvārā |
śūnya mahala men ghora andherā,
karo nāma ujiyārā || 1 ||
gagana maṇḍala se amṛta barase,
hota ānanda apārā |
anhada kī dhuna baje nirantara,
soham kā jhankārā || 2 ||
satguru sāheba kī balihārī,
bāṇa śabda kā mārā |
kahain kabīra āpa khojyā,
pāyā prāṇa ādhārā || 3 ||

bhajana 27

rāma rahīmā ekai hai re, kāhe karo laḍāyī |
vaha nirguṇiyā agama apārā,
tinon loka sahāyī || ṭeka ||
veda paḍante paṇḍita ho gaye,
sattanāma nahīn jānā |
kahain kabīrā dhyāna bhajana se,
pāyā pada nirvānā || 1 ||
eka hī māṭī kī saba kāyā, ūnca nīca koūn nālūn |
eka hī jyoti barai kabīrā,
saba ghaṭa antara māhīn || 2 ||
yaha anamolaka jīvana pāke, sadguru śabdī dhyāo |
kahain kabīrā khalaka men sārī,
eka alakha daraśāo || 3 ||

bhajana 28

sattanāma kā sumiraṇa kara le,
kala jāne kyā hoya |
jāga-jāga nara nija ātama men,
kāhe birathā soya || ṭeka ||
jehī kāraṇa tū jaga men āyā,
vo nahīn tūne karma kamāyā |
mana mailā kā mailā terā,
kāyā mala mala dhoya || 1 ||
do dina kā hai raina baserā,
kauna hai merā kauna hai terā |
huā saberā cale musāphira,
aba kyā naina bhigoya || 2 ||
guru kā śabda jagā le mana men,
caurāsī se chūṭe kṣaṇa men |
ye tana bāra bāra nahīn pāve,
śubha avasara kyon khoya || 3 ||
ye duniyān hai eka tamāsā,
kara nahīn bande isakī āśā |
kahain kabīra suno bhāī sādho,
sānyī bhaje sukha hoya || 4 ||

sākhī

sānyī se saba hota hai, bande se kachu nāhin |
rāī se parvata kare, parvata rāī māhin ||

bhajana 29

janama terā bāton hi bīta gayo,
tūne kabahun na rāma kahyo || ṭeka ||
pānca barasa kā bholā re bhālā, abato bīsa bhayo |
magara pacīsī māyā kāraṇa,
deśa videśa gayo || 1 ||
tīsa barasa jaba mati upajī, nita nita lobha nayo |
māyājoḍī lākha karoḍī,
ajahun na tṛpta bhayo || 2 ||
vṛdha bhayo taba ālasa ūpajī,
kapha nita kaṇṭha rahyo |
sangati kabahu nāhīn kīnhīn,
birathā janama gayo || 3 ||
ye sansāra matalaba kā lobhī, jhūṭhā ṭhāṭha racyo |
kahata kabīra samujha mana mūrakha,
tū kyon bhūla gayo || 4 ||

sākhī

nīnda nisānī mauta kī, uṭha kabīrā jāga |
aura rasāyana chāṇḍi ke, nāma rasāyana lāga ||

bhajana 30

nīnda se aba jāga bande, rāma men aba mana ramā |
nirguṇā se lāga bande, hai vahī paramātamā || ṭeka ||
ho gayī hai bhora kaba se, gyāna kā suraja ūgā |
jā rahī hara śvāsa birathā,
sānyī sumiraṇa men lagā || 1 ||
phira na pāyegā tū avasara, kara le apnā tū bhalā |
svapna ke bandhana hain jhūṭhe,
moha se mana ko chuḍā || 2 ||
dhāra le satanāma sākhī, bandagī karale jarā |
naina jo ulaṭe kabīrā, sānyī to sanmukha khaḍā || 3 ||

sākhī 31

kabīrā soyā kyā kare, baiṭhā rahe aura jāga |
jinake sanga te bichaḍo, vāhī ke sanga lāga || 1 ||
jyon tila māhīn tela hai, jyon cakamaka men āga |
terā sānyī tujjha men, jāga sake to jāga || 2 ||
mālā pherata juga bhayā, miṭā na mana kā phera |
kara kā manakā chāṇḍi de,
mana kā manakā phera || 3 ||
mālā to kara men phire, jībha phire mukha mānhīn |
manuvā to cahudiśa phire,
ye to sumiraṇa nāhin || 4 ||
rāma bulāvā bhejiyā, diyā kabīrā roya |
jo sukha sādhu sanga men,
so baikuṇṭha na hoya || 5 ||
pārasa men arū santa men, baḍo antaro jāna |
vo lohā kancana kare, se kara de āpa samāna || 6 ||
sumiraṇa surata lagāya ke, mukha se kachu nā bola |
bāhara ke paṭa banda kara, andara ke paṭa khola || 7 ||
śvāsa śvāsa men nāma le, vṛthā śvāsa nā khoya |
nā jāne yehi śvāsakā, āvā na hoya na hoya || 8 ||
jāgo logon mata sovo, nā karo nīda se pyāra |
jaise sapnā rainakā, eisā ye sansāra || 9 ||
kahain kabīra pukāra ke, do bāten likha de |
kara saheba ko bandagī, bhūkhon ko kachu de || 10 ||
kabīrā vā dina yāda kara, paga ūpara tara śīśa |
mirata loka men āya ke, bisara gayā jagadīśa || 11 ||
ceta sabere bāvare, phira pāche pachatāya |
tujhako jānā dūra hai, kahain kabīra jagāya || 12 ||
sānyī itanā dījiye, jāmen kuṭumba samāya |
main bhī bhūkhā nā rahūn,
sādhu na bhūkhā jāya || 13 ||
kabīra khaḍā bājāra men, māṅge sabakī khaira |
nā kāhū se dosatī, nā kāhū se baira || 14 ||
kathā kīratana kali bikhai, bhavasāgara kī nāva |
kahain kabīra bhava taraṇa ko,
nāhīn aura upāya || 15 ||
kahanā thā so kaha diyā, aba kachu kahā na jāya |
eka rahā dūjā gayā, dariyā lahara samāya || 16 ||

sākhī

kabīrā jaba hama paidā huye, jaga hanse hama roye |
eisā karanī kara calo, hama hansen jaga rove ||

bhajana 32

cādariyā jhīnī-jhīnī ke,
rāmanāma rasa bhīnī || ṭeka ||
aṣṭa kamala kā carakhā banāyā, pānca tatva kī pūnī |
nava dasa māsa bunaṇa ko lāge,
mūrakha mailī kīnī || 1 ||
jaba morī cādara bana ghara āyī, rangareja ko dīnī |
eisā ranga rangā rangareja ne,
ke lālon lāla kara dīnī || 2 ||
cādara oḍhi śankā mata kariyo,
ye do dina tumako dīnī || 3 ||
dhruva prāhalāda sudāmā ne auḍī,
śukadeva ne niramala kīnī |
dāsa kabīra ne eisī oḍhī, jyon kī tyon dhara dīnī || 4 ||

bhajana 33

mata kara moha tū,
hari bhajana ko māna re tū || ṭeka ||
nayana diye daraśana karane ko,
śravaṇa diye suna gyāna re || 1 ||
badana diye hari guṇa gāne ko,
hātha diye kara dāna re || 2 ||
kahata kabīra suno bhāī sādho,
kancana nipajata khāna re || 3 ||

bhajana 34

āpa subhāva mere, avadhū!
sadā magana men rahanā |
jagata jīva hai karamā dhīnā,
acaraja kachu nā līnā || ṭeka ||
tuma nahīn terā koyī nahīn terā, kyā kare merā merā |
terā hai, so tere pāse, avara sabai hai anerā || 1 ||
bapu vināśī tū avināśī, aba hai kintu bilāsī |
bapu sanga jaba dūra nikāsī,
taba tuma śiva kā vāsī || 2 ||
rāga nirītā doya khabītā, ye tuma duhkha kā kītā |
jaba tuma unako dura karītā,
taba tuma jaga kā īśā || 3 ||
para kī āśā sadā nirāśā, ye hai jaga jana pāsā |
te kāṭana ko karo abhyāsā, laho sadā sukhavāsā || 4 ||

śabda-nirguṇa 35

rahanā nahīn deśa birānā hai || ṭeka ||
ye sansāra kāgaja kī puḍiyā,
bunda paḍe ghula jāna hai||1||
ye sansāra kāṇṭe kī bāḍī,
ulajhī pulajhi mari jānā hai || 2 ||
ye sansāra jhāḍa aura jhānkhaḍa,
āgī lage bari jānā hai||3||
kahain kabīra suno bhāī sādho,
sataguru nāma ṭhikānā hai||4||

sākhī 36

kabīra kahatā jāta hūn, sunatā hai saba koyī |
rāma kahe bhalā hoyegā,
nahin tara bhalā na hoyī || 1 ||
kabīra kahe main kathi gayā, kathi gayā bramha maheśa |
rāmanāma tatasāra hai, saba kāhū upadeśa || 2 ||
bhagati bhajana hari nāva hai, dūjā duhkha apāra |
manasā vācā karmaṇā, kabīra sumiraṇa sāra || 3 ||
merā mana sumirai rāma kūn, merā mana rāmahi āhi |
merā mana rāmahi hvai rahā, śīśa namāvūn kāhi || 4 ||
tū tū karatā tū bhayā, tujhamen rahī na hūn |
bārī terī bali gayī, jita dekhūn tita tūn || 5 ||
kabīra nirbhaya rāma japi, jaba laga dīve bāti |
tela ghaṭyā bātī bujhī, sovegā dina rāti || 6 ||
kabīra sutā kyā kare, jāga na jape murāri |
eka dina bhī sovanā, lambe pānva pasāri || 7 ||
kabīra sūtā kyā kare, kāhe na dekhe jāgi |
jākā sanga te bīchuḍayā, tāhī ke sanga lāga || 8 ||
rāma piyārā chāṇḍi kari, kare āna kā jāpa |
veśayā kerā pūta jyūn, kahai kauna sūn bāpa || 9 ||
lūṭi sako to lūṭiyo, rāmanāma bhaṇḍāra |
kāla kaṇṭha te gahegā, rūndhe daśon duvāra || 10 ||

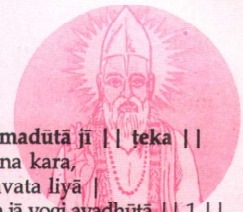

lambā māraga dūra ghara, vikaṭa pantha bahumāra |
kaho santo kyon pāīye, durlabha hari dīdāra || 11 ||

śabda 37

mana re ! kāgada kīra parāyā |
kahān bhayo vyopāra tumhāre,
kala kara baḍe savāyā || ṭeka ||
baḍe bohare sāṭhon dīnhon, kala kara kāḍo khoṭe |
cāra lāśa aru asī phika de, janama li so saba choṭe || 1 ||
aba kī bera na kāgada kīryo, taun dharma rā ī saun ṭūṭe |
pūnjī pitaḍī bandī lai kahi, taba kahe kauna te chute || 2 ||
gurudeva gyānī bhayo laganiyā, sumiraṇa dīnhon hīrā |
baḍī nisaranī nāva rāma kī, caḍi gayo pīra kabīrā || 3 ||

bhajana 38

bande sataguru sataguru bola,
terā kyā lage hai mola || ṭeka ||
daśa bīsa kosa nahīn calanā,
tere sir ape bhāra nahīn dharanā |
tere hātha paira nahīṇ hilanā,
jara īsa dila kī ghaṇḍī khola || 1 ||
ye mana baurangī ghoḍā, ghoḍe sanga pānca bacheḍā |
ye pāncon phirai luṭerā, bhāī re tu inakī bāta maroḍa || 2 ||
ye māyā hai jaga ṭhaganī, terī baḍo baḍo sanga laganī |
māyā ne jaga bharamāyā, bhāī re tu isaka gailā choḍa || 3 ||
tohe saheba kabīra samujhāven, bhule ko rāha batāven |
gayā vakta hātha nahīn āve,
bhāī re mata caurāsī men ḍola || 4 ||

bhajana 39

guru (sānyī) ke nāma bina nāhīn nistāre,
jāga-jāga nara kyā sūtā |
jagata nagarī men corana lāge,
jhakha māregā yamadūtā jī || ṭeka ||
japa kara tapa kara karoḍa yatana kara,
kāśī men jāya karavata liyā |
binā mare terī mukti na hove, mara jā yogi avadhūtā || 1 ||
yogī ho śira jaṭā baḍa lī, anga ramā laī bhaubhūtā |
damaḍī ke kāraṇa kāyā phūnka laī,
yoga nahīn ye to hada jhūṭhā || 2 ||
jinakī suratā lagī bhajana men, kāla jāla se ve nā ḍaratā |
adara-aḍī pe āsana rākhe, so yogī jana avadhūtā || 3 ||
sovata rahā nara gayā caurāsī, jāgā hai jina juga jītā |
rāmānanda kā kahain kabīrā,
manjale manjale jā pahuncā || 4 ||

śabda 40

do dina kā mehamāna, mana tu nekī kara le |
jorū laḍakā kuṭumba kabīlā,
do dina kā tana mana kā melā jī |
antakāla uṭha cale akela, taja māyā maṇḍāna || 1 ||
kahān te āyā kahān jāyegā,
tana chūṭe mana kahān samāyegā jī |
ākhira tujhako kauna kahegā,
guru bina ātama gyāna || 2 ||
kauna hai terā saccā sānyī, jhūṭhī hai ye jaga apanāī jī |
kauna ṭhikānā terā bhāī, kahān bastī kahān nāma || 3 ||
rahaṭa māla ye kūpa jala bharatā,
kabhī bhare kabhī rītā phiratā jī |
aneka bāra tū janme maratā, kyon karatā abhimāna || 4 ||
lākha caurāsī bhūkha te pyāsā,
unca nīca ghara karatā bharatā jī |
kahain kabīra jaba chūṭe sānsā, le le guru kā nāma || 5 ||

---

holī 41

holī khelata santa sujāna, ātama rāma se |
china-china pala-pala holī khelo,
niśadina āṭho yāma || ṭeka ||
paṇḍita khele pothī patharāse, kājī kiteba kurāna se |
pativratā khele apane piyā se, gaṇikā sakala jahāna se || 1 ||
yogī khele yoga-yukti se, abhimānī abhimāna se |
kāmī khele kāminī ke sanga, lobhī khele dāma se || 2 ||
ati pracaṇḍa teja māyā bala, saba jaga mārā bāna se |
koṭina māhin bace koī biralā,
kahain kabīra gurugyāna se || 3 ||

holī 42

arī ! honī holī so holī, ceta ajahun mati bholī || ṭeka ||
jugana jugana se pānva pasāre, khūba peṭa bhara so lī |
agama nigama jagāvata hāre, kaṭuka madhura bahu bolī |
ānkha tabahun nahīn kholī, honī holī so holī || 1 ||
yaha mānuṣa tana pāyake, āyu kyon khovata īta ūta ḍolī |
antasamaya yamadūta āyakai, karihain pakari ṭhaṭholī |
dekhi jiva jaihain kalolī, honī holī so holī || 2 ||
vinaya abīra svadharma agarajā, bhari gulāla kī jholī |
khelana phāga calo nija prabhuse, samatā keśara gholī |
śīśa unahīn ke ḍholī, honī holī so holī || 3 ||
jaga pracaṇḍa nasvara māyākṛta, kalpita kalita kapolī |
māna sarovara men nānā vidhi, uṭhata taranga jhakolī |
dekhu ura māhin ṭaṭolī, honi holi so holi || 4 ||
kahain kabīra suhāgina suna le, karu nija vṛtti aholī |
surati śabda kī dhāra pakari caḍu, gagana guphā jahān polī |
vastu milī hai anamolī, honī holī so holī || 5 ||

nirguṇa 43

taja diye prāṇa re kāyā kaisī roī, taja diye prāṇa || ṭeka ||
calata prāṇa kāyā kaisī roī, choḍa calā nirmohī |
main jānā mere sanga calegī,
yāhī te kāyā mala mala dhoyī || 1 ||
ūnce nīce mandira choḍe, gāya bhainsa ghara bhoḍī |
tiriyā jo kulavantī choḍī, aura putarana kī joḍī || 2 ||
morī choṭī gajī mangāī caḍā kāṭha kī ghoḍī |
cāra janai ye to laike cālen,
phūka gayī re jaise phāguna kī holī || 3 ||
bhorī tiriyā rovana lāgī, bichuḍa gay īre merī joḍī |
kahata kabīra suno bhāī sādho, jina joḍī tina toḍī || 4 ||

nirguṇa 44

hamakā auḍove cādariyā calatī biriyā || ṭeka ||
prāṇa rāma jaba nikasana loge,
ulaṭa gaī doū naina putariyā || 1 ||
bhītara se jaba bāhira lāye,
chūṭa gaī saba mahala aṭariyā ||2||
cāra janain mila khāṭa uṭhāīna,
rovata lai cale ḍagara-ḍagariyā || 3 ||
kahata kabīrā suno bhāī sādho,
sanga jalī vo sūkhī lakaḍīyā ||4||

holī 45

āja nija ghaṭa bica phāga macai hon |
taji moha māna karuṇānidhānake,
dhyāna caraṇa men lagaihon || ṭeka ||
eka svara sādhi tambūrā tan ako, svāsa ke tāra milai hon |
moda mṛdanga manjīrā manasā, vinaya ke bīna bajai hon |
bhajana satanāma ko gaihon,
āja ghaṭa bica phāga macaihon || 1 ||
bhakti umanga ranga keśara ko,
lai prabhu pai ḍarakai hon |
prema saneha gulāl agarajā, unahīn ke śīśa caḍaihon |
surati kī murati banaihon,
āja ghaṭa bica phāga macaihon || 2 ||
sāra vicāra śṛngāra sāji mati, sanmukha āni nacaihon |
vividha prakāra rijhāya nāthako, phaguvā laikari raihon |
akhaṇḍa sukha pāya aghaihon,
āja nija ghaṭa bica phāga macaihon ||3||
kīca ulīja nīca karmana ko, nigurana para barasaihon |
pātika jārī rākha kari kārikha,
vimukha ke mukha men lagai hon |
tabai dharmmadāsa kahai hon,
āja nija ghaṭa bica phāga macaihon || 4 ||

nirguṇa 46

eka to main bhorī barī, dūsare piyā ke corī-kiyā ho rāmā |
tīsare birahīnī rasavā ke, matali ho rāma | | 1 | |
phūla loḍe cacalī ye bārī,
sārī morī aṭakelī ḍārī-kiyā ho rāmā |
binā re balamuā ke sārī, koī nā choḍāvelā ho rāmā | | 2 | |
sārī morī phāṭī gailī, coliyā masakī gailī-kiyā ho rāmā |
nayanā ṭapake, nau ranga bhīnjala ho rāma | | 3 | |
bhīnjata-bhīnjata ye vārī,
caḍalo main gagana aṭārī-kiyā ho rāmā |
jahavān jogiyā, dhūn-iya ke ramāvalain ho rāma | |4| |
dhun -iya ke ramata dekhalī,
yogī ke sūtala dekhalī-kiyā ho rāmā |
yogī ke sūratiyā, hiyā bīce sālelā ho rama | | 5 | |
yogi ke duvaravā ye rāmā, anahada bajavā bājelā ho rāma |
kiyā ho rāmā jahavān nāce, sūrati sohāgīni ho rāma | | 6 | |
sāheba kabīra ihai, gāvain niragunavā-kiyā ho rāmā |
mānuṣa ho janamavān, duralabha holani ye rāma | | 7 | |

nirguṇa 47

pānī bhare jamunā re gailī,
sutala piyavā gharavān choḍalī-kiyā ho rāma |
kagavā re kuboliyā, boliyā bolelā ho rāma | | 1 | |
ghaḍīlā main bharī-bharī, dhailon kararavā kiyā ho rāmā|
lapaṭī-jhapaṭī ke kagavā, hama ūḍāīlain ho rāma| |2| |
svāmī ke sūtala hama dekhalī, goḍa se cadariyā tānī ho rāma|
kiyā ho rāmā kavane ho gunahinyān,
piyā nāhīn bolalain ho rāma | | 3 | |
phoḍabo main sākara cūḍīyā,
dhoībo main nayana kajaravā-kiyā ho rāmā |
jāī ke ayodheya, singora dahavāība ho rāma | | 4 | |
sāheba kabīra īhai, gāvain niragunavān-kiyā ho rāmā|
mānuṣa ho janamavān, duralabha holani ye rāma | | 5 | |

kīrtana 48

sukhatuma cāho to, mangala tuma cāho, bolo satyanāma |
māna tuma cāho to, sammāna tuma cāho,
karo śubhakāma | | ṭeka | |
hṛṣi-muni gyānyon kī bāta jarā suna lo,
duhkha-sukha donon men se jo bhī cāhe cuna lo |
kyā hai galata sahī, mana men hī guna lo,
jānca lo parakha lo, sahī hoto cuna lo |
tana aura dhana se ānanda tuma cāho to,
karo śubha kāma | | 1 | |
ādamī se baḍakara ādamī koī nahīn,
rājā-phakīra-deva mānava se alaga nahīn |
manava ke vāste dharatī sajāī hai,
pyārī-pyārī pyāra bharī duniyān banāī hai |
bhakti-mukti cāho to, pyāra ko nibhāo to,
bolo satyanāma | | 2 | |
īśvara kī lilā hai, khudā kī hai khudāī |
ṣadguru kī vānī rāha īśā ne batāī hai |
harī-bharī dharatī hogī, sabhī sukha pāvenge,
bārūda ke ḍhera para kaise gīta gāvenge |
bhaya ko miṭānā hai to,
sabhī ko bacānā hai to, bolo satyanāma | | 3 |
kahī thī kabīra ne 'dadhi' ne batāī hai,
dhartī ke nāma para jāna pe bana āī hai |
ādamī men śyāma sāyīn īśā hai rahīma hai,
ādamī ke bhītara hī kṛṣṇa hai karīma hai |
ṣukha barasāna hai to,
ānanda ko pānā hai to bolo satyanāma | | 4 | |

sohara 49

satanāma sukha sāgara, adhama udhārana ho lalanā |
leta nāma tari jāya, miṭe yama jhāgara ho | | 1 | |
jaba rahe jananī ke garabha, taba ke sanvārelā ho lalanā |
jina diyo tana mana prāṇa, tāhī bisarāvelā ho | | 2 | |
tyāgahu kapaṭa kī prīti, viṣaya rasa chāḍahu ho lalanā|
māta pita kula tyāgahu, prabhu guru lāgahu ho | | 3| |
pahirahū nirabhaya kī cīra, kuṭuma lajāvahu ho lalanā|
hansī piyā dihalī suhāga, kanta ura lāgahu ho | | 4 | |
satanāma guṇa gāvahū ta, cita na ḍolāvahu ho lalanā|
kahanhin kabīra satabhāva, amara pada pāvahū ho| |5| |

āratī 1

āratī mangala gāīye, satapuruṣa manāvo |
satapuruṣa manāvo,
satapuruṣa manāvo - 2 satapuruṣa manāvo ...
āratī mangala gāīye, satapuruṣa manāvo .... | | ṭeka | |
pūrva diśā se bankejī gurū āye - 2
kalaṣa āna dharāīye, satapuruṣa manāvo ..... | | 1 | |
pascima diśā se sahatejī guru āye - 2
pāṣāṇa āna dharāīye, satapuruṣa manāvo .... | | 2 | |
dakṣiṇa diśā se caturbhuja guru āye - 2
amīdala āna dharāīye, satapuruṣa manāvo .... | | 3 | |
uttara diśā se dharmadāsa guru āye - 2
ārātī āna dharāīye, satapuruṣa manāvo ..... | | 4 | |
madhya sinhāsana satapuruṣa virāje - 2
pāna prasāda dharāīye, satapuruṣa manāvo ... | | 5 | |
cāron diśā se cāron guru āye - 2
caukā āna purāīye, satapuruṣa manāvo ..... | | 6 | |
kahain kabīra suno bhāī sādho - 2
mokṣa parama pada pāīye, satapuruṣa manāvo | | 7 | |

āratī (2)

āratī satya kabīra tumhārī,
dayā karo sāheba jāūn balihārī | | ṭeka | |
pahalī āratī puhumī āye,
kāśī pragaṭe guru kahāye | | 1 | |
dūsara āratī devala thapāye,
āśā ropi samudra haṭāye | | 2 | |
tīsara āratī caraṇa jala dāre,
hari ke paṇḍā jarata ubāre | | 3 | |
cauthī āratī turahin dhāye,
toḍa janjīra tīra le āye | | 4 | |
pāncave āratī balakha sidhāye,
caurāsī sidha ke bandha chuḍāye | | 5 | |
chaṭhavīn āratī avigata dhare,
muradā se jindā kari ḍāre | | 6 | |
sātaven āratī pīra kahāye,
magahara āmī nadī bahāye | | 7 | |
āṭhaven āratī maṇḍala sidhāye,
jana gyānī ke sanśaya miṭāye | | 8 | |
kahan lagi kahaun varaṇi nahīn jāye,
dharmadāsa āratī sacupāye | | 9 | |

कीर्तन ४८

सुखतुम चाहो तो, मंगल तुम चाहो, बोलो सत्यनाम ।
मान तुम चाहो तो, सम्मान तुम चाहो, करो शुभ काम ।टेक।।
ऋषि-मुनि ज्ञानियों की बात जरा सुन लो,
दुःख-सुख दोनों में से जो भी चाहे चुन लो ।
क्या है गलत सही, मन में ही गुन लो,
जाँच लो परख लो, सही हो तो चुन लो ।
तन और धन से आनन्द तुम चाहो तो, करो शुभ काम ।।१।।
आदमी से बढ़कर आदमी कोई नहीं, राजा-फकीर-देव मानव से अलग नहीं ।
मानव के वास्ते धरती सजाई है, प्यारी-प्यारी प्यार भरी दुनियाँ बनाई है ।
भक्ति-मुक्ति चाहो तो, प्यार को निभाओ तो, बोलो सत्यनाम ।।२।।
ईश्वर की लीला है, खुदा की है खुदाई, सद्गुरु की वाणी राह ईशा ने बताई है ।
हरी-भरी धरती होगी, सभी सुख पावेंगे, बारूद के ढेर पर कैसे गीत गावेंगे ।
भय को मिटाना है तो, सभी को बचाना है तो, बोलो सत्यनाम ।।३।।
कही थी कबीर ने 'दधि' ने बताई है,
धरती के नाम पर जान पे बन आई है ।
आदमी में श्याम साईं ईशा है रहीम है,
आदमी के भीतर ही कृष्ण है करीम है ।
सुख बरसाना है तो, आनन्द को पाना है तो बोलो सत्यनाम ।।४।।

सोहर ४९

सतनाम सुख सागर, अधम उधारन हो ललना ।
लेत नाम तरि जाय, मिटे यम झागर हो ।।१।।
जब रहे जननी के गरभ, तब के सँवारेला हो ललना ।
जिन दियो तन मन प्राण, ताही बिसरावेला हो ।।२।।
त्यागहु कपट की प्रीति, विषय रस छाड़हु हो ललना ।
मात पिता कुल त्यागहु, प्रभु गुरु लागहु हो ।।३।।
पहिरहु निरभय की चीर, कुटुम लजावहु हो ललना ।
हंसी पियो दिहली सुहाग, कन्त उर लागहु हो ।।४।।
सतनाम गुण गावहु त, चित न डोलावहु हो ललना ।
कहँहि कबीर सतभाव, अमर पद पावहु हो ।।५।।

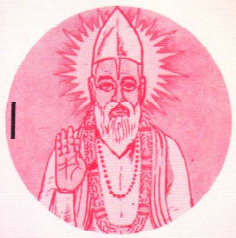

|| śrīsadgurucaraṇakamalebhyo namaḥ ||

|| atha Sadguru śrī Kabīramahimnaḥstotram ||

Pujyapāda Svāmī Bramhalīna Muni jī Maharāja Viracita
san 1960 Surat Gujarat-Bharat

||1||
śantakāraṁ sakalasuhṛdaṁ puṇyapuñjaṁ sudhīśam ;
sasmerāsyaṁ satatamabhito 'khaṇḍavātsalya yuktam |
lakṣmīnātham śrutinayanaparaṁ
chātravṛndaiḥ sujuṣṭam ;
natvā vidyāguruvaramahaṁsadgurūṁ
staumi bhaktayā ||

||2||
mahimnaḥ stotuṁ te naramunisurāṇāmapigiro ;
na samyak śaktāstadguruvara !
kathaṁ staumi nitarām |
agamyaṁ vācāṁ tvāmihatadapi bhaktyāvyavasitaḥ;
punāmi svāṁ vāṇiṁ
guṇakathanapuṇyena bhavataḥ ||

||3||
acintyānantyatvanmahijaladheḥ pāragamanam;
sadadhyanāvasthaiḥ sukṛtatatiniṣṭhaiścakathinam |
tadudyogo 'yaṁ me pragaladuḍupenābdhitaraṇam;
tvayā ' 'yukto 'smimstatkurumayi
kṛpāṁ pāragataye ||

||4||
sadājuṣṭaṁ sadśiryatinṛpatisaṁsevitapadam;
atarkyaiśvaryaṁtvāmatiśayitamandāraviṭapam |
sadādhāraṁ śāntaṁ sakalasukhadaṁ śāntisadanam;
na jane 'nyaṁ kaṁcadbhayaharaṁ tāpaśamanam ||

||5||
svayaṁ svātmārāmoramayasi santaḥ śānti vipine;
janāntaṭhaṁ gāṇḍa śamayasi tamaḥ puñjanikaram |
nirāloke loke diśasi satataṁ satpathatatim;
parānandaṁ nityaṁ vikarasi mudā vīgyasadasi ||

||6||
yadārabdhaṁ mlaicchairdvijmunisatām
prāṇahananam ;
gavāṁ dhātonityaṁ nijagṛhahṛtā āryalalanā : |
vinaṣaṭāḥ sadgrathāḥ surasadanasampātamaniṣam ;
mudā sasnuste vai dvijasujanasūtroṣṇapayasa ||

||7||
adīkṣyaitaakṛtyaṁ nirayagatajīvo 'pi satatam ;
bhṛśaṁ vrīḍāpanno 'dhigayadivatān bhūtanivahaḥ |
yadārtonādaḥsaddhṛdayakuharāt prādurabhavat ;
paraṁ kṣubdho lokaḥ svayamapipareśaḥkaluṣitaḥ ||

||8||
athasvīyāṁ vāṇiṁ smṛtipaṭalamānīya manasā ;
tadabdheścodhartuṁ sukṛti pathamānetumabhitaḥ |
kṣaṇādāvirbhūtomanujatanudhārī vratadhar- ;
stvamevābhūḥ samyaga guruvara ! satāṁ rakṣaṇakṛtī ||

||9||
pareśaḥsākṣātsatsukṛtaśubhanāmnākṛtayuge ;
sudhāmayyāvācā sakalasukhadaḥsantatamabhūḥ |
munīndrastretāyāmatha ca karuṇādvāparayuge ;
kalauvikhyātaḥ sadguruvarakavīraḥparapumān ||

||10||
nirīhaḥsancchāstāniravadhiguṇonirguṇavibhu- ;
rnirādhārodhatso 'carasucaramuccāvacabhuvam |
ajanmā bhaktānāṁ niratiśayaśāntyaiva januṣe ;
atarkyaśvaryante nahi prakṛtitantrāḥ
prabhudhiyaḥ ||

||11||
sadāsidhārthāstenanu sadasi devāsurnṛṇām ;
pravartante vācaḥ suragurumanovismayakṛtaḥ |
tatobhaktiśradhābharaparamabhāvena manasā ;
gṛṇanto 'bhūvanste kṛtiṣu saphalāstvatsukṛpayā ||

||12||
vidheyoviśvaste 'parimitaguṇānāmadhipate !
atastvaṁ lokānāṁ paramakaruṇāmāśu tanuṣe |
trayīsidhāsidhirbhavatu phaladā 'hnāya jagatām ;
iti dhyānāvāptaṁbahuvidhamacintyaṁ tava vapuḥ ||

||13||
triloke vikhyātā tridaśapatimānyā haripriyā ;
parasyāstasyāstvaṁsatatamanugāyājanahṛdi |
vinā bhedaṁ loke niyatavaradānavratadharo ;
dayāmūrttiḥ sākṣād bhuvi vijayase sadguruvara ! ||

||14||
mahākālākrāntaṁ trividhabhavatāpākulahṛdam ;
divārātraṁ bhogekṛtabahuvidhāsaṁmaniśam |
jaganmohagrastaṁ prabalamadamātamgajagatim ;
kṛpāpārāvāro diṣasi satataṁ satpathatatim ||

||15||
nijecchātaḥ samyak sakalasudhiyā 'cintyaracanam ;
viracyāntaḥ syūtobhuvanamasilīlāparavaśaḥ |
punarbhūtvā loke nanu guruvaro muktisukhadah ;
māhimanastepāraṁ ka īhakṛtināṁ veda nikhilam ||

||16||
jagatpūjyaḥ pūjāvidhiparavitānśca nikhil :;
svayaṁ dharmodharmyastvamasikulajātyādiṣu
gataḥ |
tridhārūpaṁ sākṣādvividhamatharūpaṁ tava jagat ;
tridhā bhaktyā bhakton vrajati
niyataṁ tvāṁ parapadam ||

||17||
janakṛtyāptaino vipulavanadavanalasadṛk ;
bhavāmbhodhiṁ pāre suladhugataye hyuttamatarī |
parānandāsvādapradaparataraṁ sādhanamaho ;
tvaddhre sevāsadguruvara ! sadā śanti sukhadā ||

||18||
yadātvāryyānāryyastvayinijadhiyādveṣamagaman ;
bhuvi bhrantyāpanne nikhilajanamohaṁ śamayitum |
vibhājyānte dehaṁ śubhakusumapuñjena jagatām ;
manovismāpya drāk bhuvanagurutāvyaktimakaroḥ ||

||19||
kvaciddhyānāsaktaṁ kvacidapi ca netṛtvacaritam ;
kvacillakṣa lokeratha punaralakṣyaṁ tava vapuḥ |
kvacidbhikṣāvṛttiḥ kvacidapi nṛpaiḥ sovitapad :
caritram te nunam guruvara ! vimohāya kudhiyām ||

||20||
ṭanau sansthe hanse yatibhiraniśamdhyananirataiḥ ;
kṛtāntaḥ sadvṛtyā śamita parakṛtyāplutivaśāt |
na lebhe śāntistvaccaraṇavimukhaiḥkoṭikṛtibhiḥ ;
satāṁ sansidhistattavaparamabhaktyaiva bhavati ||

||21||
tavāścaryakṛtyaṁ vimalataravākyaṁcanikhilam;
kṛpādṛṣṭiḥsākṣātparamapadadātṛītanubhṛtām |
sadāśāntimudrāvitathapathahantrī sukṛtinām;
punītamtvatsarvaṁ mamavimalamantaḥprakurutām ||

continued in next issue ...

Tisa Yantra
Thirty Talismanic Couplets

1
jagāīye kyā? prema |
What is to be roused? Love
2
kījiye kyā? pūjā |
What is to be done? Worship.
3
parakhiye kyā? śabda |
What is to be attended? Words
4
lījiye kyā? nāma |
What is to be recited?
(Holy) Name
5
kariye kyā? ṣatsanga |
What is to be held?
Truth seeking discourses.
6
hoīye kyā? dāsa |
What is to be become?
A God-Man or a Devotee.
7
boliye kyā? mīṭhā |
What is to be uttered?
Sweet Words.
8
māniye kyā? sānca |
What view should be taken?
Realistic.
9
barāīye kyā? jhagaḍā |
What is to be avoided? Quarrel.
10
khāīye kyā? gama |
What is to be eaten?
Intolerance or Irritability.
11
pījiye kyā? tāmasa |
What is to be drunk? Anger.
12
rakhāye kyā? ḍharma |
What is to be performed?
One own duty.
13
tyāgiye kyā? ṣaba kachu |
What is to be surrendered? All?
14
choḍiye kyā? abhimāna |
What is to be shunned? Pride.
15
pāiye kyā? sukha |
What is to be obtained? Bliss.
16
dekhiye kyā? ātmārāma |
What is to be realized?
The universal or all-pervading self.
17
miṭāīye kyā? bhrama |
What is to be obliterated? Delusion.
18
ḷakhiye kyā? apanā rūpa |
What is to be realized?Own true self.
19
ṣuniye kyā? guna |
What is to be heard? Merits
20
sādhiye kyā? Indriyān
What is to be controlled? Senses,
21
māriye kyā? āsā |
What is to be killed? Expectation.
22
dījiye kyā? dāna |
What is to be given? Alms.
23
baḍā puṇya kyā? upakāra |
What is the greatest virtue?Kindliness.
24
baḍā pāpa kyā? hinsā |
What is the greatest crime?Violence or killing.
25
khuśaboī kyā? yaśa |
What is sweet-smelling?Reputation.
26
durgandha kyā? apayaśa |
What is bad smelling? Disreputation.
27
dhariye kyā? dhīraja |
What is to be adopted? Calmness.
28
ṭhaharāīye kyā? mana |
What is to be concentrated? Mind.
29
honī kyā? honahāra |
What is to be take place?The Destined.
30
vicāriye kyā? tatva |
What is to be pondered over? he Essential.